कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः12, अंकः 10
जुलाई 2013

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा

संरक्षक सदस्य
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

सहयोग राशि

एक प्रति	: रु0 10/–
वार्षिक	: रु0 110/–
पंचवर्षीय	: रु0 500/–
आजीवन सदस्य	: रु0 1500/–
संरक्षक सदस्य	: रु0 5000/–

संपादकीय कार्यालय
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 **का0:** 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com
सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित कराया गया.

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

इस अंक में......

विद्यालयों में दाखिले की दौड़ 06
-हितेश कुमार शर्मा
अब भरोसे लायक नहीं रही भारत की राजनीति...........07
-डॉ० अरुण कुमार आनन्द
रहीम खानखानाः कालजयी रचनाकार 10
-कान्ति अय्यर
गुरू गरिमा- -किसान दीवान............11
कागजी शिक्षा- -रामकृष्ण गर्ग............12
यात्रा के क्षणों में- -श्रीमती संपत देवी मुरारका....13
लक्ष्य प्राप्ति के लिए अनिवार्य है विरोधी भावों का त्याग...... 16
-सीता राम गुप्ता
समाज को समर्पितः पतविन्दर सिंह 17

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग	04
अपनी बातः विकास या विनाश	05
व्यंग्यः एक अनार सौ बीमार- बी.आर.परमार	08
हंसना मना है	19
कविताएंः	
कल्याणी सिंह, रमेश चन्द्र शर्मा, शबनम शर्मा, रामकेवल असरार नसीमी, डॉ० गार्गी शरण मिश्र 'मराल', पी.एस.भारती, बृज बिहारी 'ब्रजेश'	23–24
ग़ज़लः सरदार पंछी	32
कहानीः शराफत अली-गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	20–22
आध्यात्मः जीवन के उस पार -डॉ० अरुण कुमार आनंद	27
आपकी डाक	28
स्वास्थ्य	29
साहित्य समाचार-	9,14, 18, 19, 25–26, 30
कहानीः सिंदूर-गणेश प्रसाद महतो	३१
लघु कथाएँ	33
समीक्षा	34

जवानी जीवन की अवस्थाओं में सबसे सुकुमार समानों की रंगीनियां लेकर चलती हैं. उनको साकार करने की उत्कंठा उग्र होती है. इसके मस्ती में अनोखा आनन्द होता है.

जवानी का दुरुपयोग जीवन की सबसे बड़ी पराजय है, जिसने इसकी अवहेलना की उसे अन्त तक भोगना पड़ता है. इसका समुचित उपयोग ही उसे सच्चा आनन्द देता हैं.

जवानी को बहकने से बचाना चाहिए, संसारिक प्रदर्शन से बचकर उत्थान की ओर अग्रसर होना चाहिए. मन को अकुंश द्वारा सब में रखकर निरंकुशता से बचाना अपना कर्त्तव्य हैं.

जवानी में कितनी ओजस्विता देखी जाती है, जीवन का विकास इस अवस्था में ही हो पाता है. रूप की निखार एवम उमंगो की बहार चरम पर होती है. इसकी मादकता पर सर्वस्व न्यौछावर है.

जवानी में आकर्षण होता है, अपनी तरफ बरबस खींच लेना इसका स्वाभाविक गुण हैं. इसमें दूसरों को समेटने की शक्ति तथा अलौकिक स्फूर्ति होती है.

दूसरों की समृध्दि, उन्नति देखकर, ईर्ष्या करना कुछ लोगों का स्वाभाविक विकार होता है. ऐसी ईर्ष्या से वह अप्रत्यक्ष रूप से अपनी ही हानि करता है. ईर्ष्या से नैतिक पतन होता है.

धन, सुख सुविधाओं को बढ़ाता है, समाज में स्थायित्व लाता है, परन्तु अनैतिक साधनों से जुटाया गया धन दुःख अशान्ति को जन्म देता है.

कुत्ता घोड़ा, बन्दर आदि पशुओं में जो स्वाभाविक भक्ति का गुण जितनी मात्रा में पाया जाता है इसके विपरीत कुछ व्यक्तियों में क्रम देखने को मिलता है. अपने रक्षक, स्वामी का अहित करना उसका स्वभाव हो गया है. वह मानव होकर पशुओं से भी निम्न हो गया है.

दूसरों के दुःख में, दुःखी होना, असहाय की सहायता करना, किसी के रुदन पर नेत्रों का सजल हो जाना यह मानव का स्वाभाविक गुण है, किन्तु इसके विपरीत दुःखी, निरादर तथा उपहास करना अमानुशिकता है.

ज्ञान अज्ञान को नष्ट करता है, सज्जन दुर्जन को सुधारता है, किन्तु यदि इसका विरोधाभास हो तो क्या कहा जाय? हमारी विसता यदि उच्छखलता, स्वार्थ अपहरण में बदल जाय तो इसमें किसका दोष दिया जाए और कहां तक रोया जाय.

जीवन नश्वर है, चेतन अचेतन सबका विनाश, यह जगत नश्वर है फिर भी यह सब छीना, झपटी, मार-काट अन्याय कितने दिनों के लिए? किस सुख के लिए जिसका विनाश अवश्यम्भावी है. यह अत्याचार किसके लिए? यह सब क्या? अज्ञानता की पराकाष्ठा हैं.

-दाउजी

आदाब अर्ज़ है डाक विभाग की मेहरबानी

३३ किलोमीटर की दूरी १३३ दिनों में

(१८.०१.२०१३ को इलाहाबाद प्रधान डाकघर से भेजी गया आमंत्रण पत्र इलाहाबाद से मात्र ३३ किमी. की दूरी पर स्थित ईफको फूलपुर में ३१.०५.२०१३ को मिली)

डाक विभाग को डाक पहुंचाने के लिए बहुत-बहुत बधाई

विकास या विनाश?

हमारे देश में कितना पैसा विकास के नाम पर खर्च होता है. यदि यह आँकड़ा निकले तो आप सर पकड़ कर बैठ जाएँगे. विकास के लिए राष्ट्रीय स्तर से लेकर ग्राम/नगर पंचायत स्तर तक विकास के लिए फंडो की कमी नहीं है. सबके अलग-अलग फंड है. इनके अतिरिक्त केन्द्र सरकार व राज्य सरकार सीधे कुछ फंड ग्राम पंचायतों/नगर पंचायतों/नगर पालिका/नगर महापालिका/नगर निगम को देती हैं. इन सबके अतिरिक्त सांसद लोकसभा, सासंद-राज्यसभा, विधायक, विधान परिषद सदस्य, जिला विकास निधि, ब्लाक, राज्य विकास निधि व केन्द्रीय सरकार की विकास योजनाओं के जो पैसे आते हैं वो अलग हैं. उपरोक्त सभी निधियों के पैसों का बिन्दुवार आंकड़ा देना संभव नहीं है. लेकिन इतने पैसे खर्च करने के बावजूद विकास कहीं जमीन पर दिखता ही नहीं. सभी निधियों को जोड़ने पर सामान्यतः एक मध्यम श्रेणी के जिले में प्रति वर्ष 5 से 10 अरब रुपये विभिन्न निधियों से विकास के नाम पर आते हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि सामान्यतः ये पैसे सड़कों पर खर्च किए जाते है लेकिन विकास क्या दिखता है वहीं टूटी-फूटी संड़कें, बजबजाती नालियां, न बिजली, न पानी. अन्य की तो बात ही छोड़िए. कारण क्या है? इतना पैसा जाता कहाँ है? अधिकतर पैसे तो बंदरबाँट में निकल जाते हैं जो बचते है उनकी सिर्फ और सिर्फ बर्बादी की जाती है. जिसको आम बोलचाल की भाषा में लिपापोती कहा जाता है. पहले सड़के बनाई जाती हैं, फिर सड़क खोद कर सीवर लाईन बिछाया जाता है, सीवर लाईन का पाईप डालकर, रोलर से गिट्टी डालकर भरा जाता है और सड़क बना दी जाती है. उसके बाद सड़क खोदकर सीवर का ज्वाईंट बनाया जाता है, फिर सड़क सड़क बनती है. उसके बाद नाली खोदी जाती है. जब नाली बन जाती है उसके बाद फिर खोदकर पानी का क्रास बनाया जाता है, फिर सड़क बनती है. जब सड़क बन जाती है तो टेलीफोन लाईन्स के लिए खुदाई होती है. जो सड़के बनती है उनकी गुणवत्ता की तो बात ही मत कीजिए. सड़क के किनारे तारकोल छिड़का, बना बनाया ट्रक से डामर लाकर बिछाया. सड़क तैयार. ये नवनिर्मित सड़के इतनी मजबूत होती है कि अगर आप दूसरे दिन अपनी स्कूटर सड़क पर खड़ी कर दे तो कच्ची मिट्टी की तरह स्टैंड सड़क में धस जाता है. परिणाम फिर वहीं मिलता है दो से तीन माह में टूटी फूटी सड़के, बजबजाती नालियां, फिर बरकरार अपने हाल पर रोने के लिए मजबूर. अगले वर्ष फिर बजट बनता है इनके लिए.

बरसात का मौसम शुरू होते ही नालियों के बनाने व उनकी सफाई का कार्य प्रारम्भ कर दिया जाता है. शेष 9 महीनों में इन पर कोई कार्य नहीं होता है. जब तक कुछ नालियों की सफाई होकर मलवा अभी सड़क पर पड़ा ही रहता है कि बरसात हो जाती है, फिर सारा मलवा नाली के अंदर. अगर मान लीजिए पूरे शहर में दो किलोमीटर की नाली है तो अधिकतम 100 मीटर की नाली की सफाई होती है और शेष 1900 सहित दो किलोमीटर नाली की सफाई का बिल पास. इंजीनियर, बाबू व ठेकेदार खुशहाल और नाली फिर मलवे से मालमाल हो जाती है. आइये चलते हैं गांवों की सड़कों पर बरसात के समय मिट्टी डाली जाती है, जो दो फीट के स्थान पर एक परत चढ़ा दी जाती है, बरसात होती है सड़क और पटरी की मिट्टी फिर स्वाहा. सड़के, गलियां फिर गढ़डा युक्त. बिल तैयार ठेकेदार और अधिकारी खुश. अगले वित्तीय वर्ष का फिर इंतजार चालू.

इसी तरह होता है हमारे देश के विकास के पैसों का बंदरबाँट. लेकिन हम लोग बस यह देखकर खुश होते रहते हैं कि हमारे मुहल्ले/गांव की सड़क अभी बनी है. अरे उठो जागो! ये हराम का पैसा नहीं है हमारा आपका पैसा है. इन्हीं बन्दरबाट के पैसों के कारण हम पर आये दिन टैक्स की मार बढ़ती जा रही है. उठो जागो और अपने हक के लिए लड़ो. अपने सांसद/विधायक/नगर पंचायत/ग्राम पंचायत से पूछो न जवाब दें तो आरटीआई डालो. आखिर कब तक सोते रहोगे?

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

विद्यालयों में दाखिले की दौड़

परीक्षाएं होते ही ईसाई समाज द्वारा स्थापित विद्यालयों में दाखिले के लिए दौड़ शुरु हो जाती है. माता-पिता को लगता है कि इनमें दाखिला मिलते ही मेरा बच्चा राहुल गांधी, जयन्त चौधरी, मुकेश अम्बानी अथवा लक्ष्मी मित्तल हो सकता है.

हमारे देश का दुर्भाग्य है कि अभी तक जनसंख्या के हिसाब से विद्यालय नहीं है. निजी विद्यालयों में फीस और दान के नाम पर इतना धन मांगा जाता है कि आदमी पढ़ाने की बजाय आत्महत्या करना पसन्द करेगा. अधिकांश विद्यालयों में पढ़ाई नाम पर केवल खाना पूर्ति ही की जाती है.

-हितेश कुमार शर्मा,
बिजनौर, उ.प्र.

परीक्षाएँ समाप्त हो गयी हैं और अगली कक्षा में दाखिले के लिए अथवा नर्सरी कक्षाओं में छोटे बच्चे के दाखिले के लिए माता-पिता दौड़ लगा रहे हैं और पहली पसन्द होती है ईसाई समाज द्वारा स्थापित सेन्ट मेरी, सेन्ट जीसस अथवा सेन्ट ल्यूक्स जैसे विद्यालय. इन ईसाई विद्यालयों की ओर माता-पिता इन बच्चों को लेकर इस प्रकार दौड़ रहे है जैसे इस स्कूल में दाखिला मिलने के पश्चात उनके बच्चे का भविष्य राजीव गांध अथवा जयन्त चौधरी जैसा हो जायेगा. यह भी मानना है कि इन स्कूलों में पढ़ने के बाद बच्चा आई.ए.एस. भी बन सकता है और सफल उद्योगपति मुकेश अम्बानी अथवा लक्ष्मी मित्तल हो सकता है. प्रत्येक दृष्टिकोण से हर माता-पिता अपने बच्चों को ऐसी ही अंग्रेजी स्कूलों में दाखिला कराने के लिए दौड़ लगाते हैं. विद्यालयों में सीट सीमित होती है तथा जिन बच्चों का दाखिला नहीं हो पाता उनके माता-पिता सिफारिशें कराते हैं, पहुंच का सहारा लेते है और दाखिला न मिलने पर वह और उनकी पहुंच दोनों ही अपमानित महसूस करते है. सिफारिश करने वही व्यक्ति जाता है जिसको यह अहसास होता है कि उसके कहने से काम हो जायेगा. किन्तु जब काम नहीं होता तो दुःखी और अपमानित होना स्वाभाविक है.

इसके बाद नम्बर आता है सी.बी.एस.ई मान्यता प्राप्त विद्यालयों का. यहां भी वही भीड़ होती है. यहां भी वही सिफारिश और पहुंच का सहारा लिया जाता है. ऐसे विद्यालयों में भी अपने बच्चों को दाखिल कराने में सफल होने वाले माता-पिता स्वयं को और अपने बच्चों को भाग्यशाली मानते हैं. यहां भी यही धारणा है कि सी.बी.एस.ई मान्यता प्राप्त विद्यालयों में पढ़ने वाला बच्चा जिन्दगी की दौड़ में सबसे आगे निकल सकता है. जिन बच्चों को यहां दाखिला नहीं मिल पाता वह राजकीय इंटर कॉलेज की ओर दौड़ते हैं. वहां पर भी यही स्थिति होती है. अन्य स्कूलों का नम्बर सबसे अन्त में आता है. और कभी-कभी तो वहां पर भी दाखिला नहीं मिल पाता. यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि अभी तक राज्य सरकारें जनसंख्या के हिसाब से विद्यालयों का प्रबन्ध नहीं कर सकी है. जो व्यक्ति निजी विद्यालय चला रहे है वहां पर फीस और दान के नाम पर इतना धन मांगा जाता है कि आदमी बच्चों को पढ़ाने की बजाय आत्महत्या करना पसन्द करता है. अन्य स्कूलों का स्तर पढ़ने योग्य नहीं होता. कुछ विद्यालय कमाई के लिए खुलते है और कुछ अपना शौक पूरा करने के लिए स्थापित कर लिये जाते हैं. सरकार की ओर से औपचारिक जांच पड़ताल होती रहती है जिसमें यह सिद्ध नहीं हो पाता कि विद्यालयों का स्तर क्या है और वहां पढ़ाई कैसी हो रही है. केवल खाना-पूर्ती की जाती है. कहीं अप्रशिक्षित शिक्षक होते है तो कहीं अनपढ़ बच्चों की भीड़ होती है. अन्दर से देखिये तो निजी विद्यालयों की स्थिति संतोषजनक नहीं होती. यही कारण है कि यहां पर बच्चा और उसके माता-पिता संतोष का अनुभव नहीं करते. स्तरहीन विद्यालयों को अथवा शौकिया चलाये जा रहे विद्यालयों को बन्द किया जाना ही उचित है. सरकार को जनसंख्या के हिसाब से उच्च स्तरीय विद्यालयों की स्थापना करनी चाहिए. जिसमें प्रशिक्षित शिक्षकों को नियुक्त किया जाना चाहिए.

वंदे मातरम(लघु कथा संग्रह) **जय श्रीराम** काव्य संग्रह
सम्पादक/रचनाकारः आचार्य यदुमणि कुम्हार
प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद, उ.प्र

अब भरोसे लायक नहीं रही भारत की राजनीति

■ जल्दी ही भारत की राजनीतिक व्यवस्था को बदलना होगा

लोकपाल के मुद्दे पर संसद में जो कुछ भी हुआ वह बेहद गम्भीर और शर्मनाक घटना थी. यह कोई एक दल विशेष की ही जिम्मेदार नहीं है. इसके लिए सभी दल जिम्मेदार है जो लोकपाल मंच पर तो अन्ना हजारे का समर्थन करते रहे लेकिन लोकपाल विधेयक पर विरोध.

केन्द्र में स्वच्छ राजनीतिक पार्टी की सरकार बनने से ही बदलाव संभव हैं.

-डॉ०अरुण कुमार आनन्द,
चन्दौसी, भीमनगर, उ.प्र.

भारत की राजनीति में सन् 2011—12 काला वर्ष रहा है. इस वर्ष देश के विकास के मुद्दे कम उठते रहे, घपला-घोटाला काण्ड परत दर परत उजागर होते रहे हैं. यह शिलशिला अब भी जारी है. जहां लोकपाल के मुद्दे पर संसद में जो कुछ भी हुआ वह बेहद गम्भीर और शर्मनाक घटनाा थी. वह प्रजातंत्र व्यवस्था पर कुठारा घात था. इसके लिए वर्तमान स्वार्थी, अवसरवादी राजनीति ही उत्तरदायी है. यह कोई एक दल विशेषकर सत्तारूढ़ गठबंधन सरकार ही जिम्मेदार नहीं है. वे सब राष्ट्रीय दलों के राजनीतिज्ञ भी उतने ही जिम्मेदार है जो लोकपाल मंच पर तो अन्ना हजारे के आन्दोलन का समर्थन करते रहे और लोकसभा में लोकपाल विधेयक पर विरोध प्रगट कर दिया तो देश की जनता चुनाव काल में इन दलों के नेता कितने ही लोक-लुभावन घोषणाएं करें कैसे भरोसा कर सकती है? किंतु मतदान करना उनका कर्त्तव्य है. सब जानबुझकर भी जनता मतदान करने को मजबूर है क्योंकि स्वच्छ राजनीति का उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है. यदि अन्ना समर्थक एक विकल्प है भी तो उन्हें चुनने से कोई लाभ भी नहीं है. केन्द्र में स्वच्छ राजनीतिक पार्टी की सरकार बनने से ही बदलाव संभव हैं जो वर्तमान परिवेश में संभव नहीं दिखता. वर्तमान परिवेश में चाहे किसी भी राजनीतिक दल की सरकार हो सशक्त लोकपाल को पारित करवा पाना संभव नहीं है. वर्तमान में अनेक दलों के नेताओं ने सदन में अपने भाषणों में भले ही अपने आलोचकों का मजाक उड़ाया हो या राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य कसा हो लेकिन उन्होंने जनता के समक्ष यह संदेश जरुर दिया है कि भारत के वर्तमान राजनीतिज्ञ लोग इस भरोसे के लायक नहीं है कि देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को समूल नष्ट कर देंगे, वह महात्मा गांधी जी का युग लद गया, जब मुल्ला फाकता उड़ाया करते थे. आज राजनीतिक कबूतर बाज बन गये है. चुनाव काल में भले ही वे भ्रष्टाचार उन्मूलन की घोषणाएं करें सच्चाई यह है कि किसी भी पार्टी के नेता भ्रष्टाचार को नियंत्रित करने में कोई रुचि नहीं रखते हैं. भ्रष्टाचार ही नहीं रहेगा तो अरबो-खरबों करोड़ों रुपयों का घोटाला कैसे होगा? इसलिए तो राजनीतिज्ञ मलाई दार मंत्रीपद पाने के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहते हैं.

कहने-देखने में तो मुख्य विपक्षीी दल भाजपा अन्ना आंदोलन का अप्रत्यक्ष समर्थक रही है लेकिन अन्दर से वह भी विरोधी है. यदि न हो तो जैसा भी लोकपाल बिल लोकसभा में पास हुआ था राज्यसभा में भी भाजपा के समर्थन से पास होना जाना चाहिए था. अन्ना को संतुष्ट किए बिना भविष्य की राजनीति का रणनीति तैयार करना कठिन ही नहीं असम्भव भी है. क्योंकि अन्ना के नेतृत्व में भारत की जनता भारत की राजनीति में समग्र व्यापक परिवर्तन चाहती है. इसलिए भविष्य में होने वाले अन्ना आन्दोलन को रोकपाना सरकार के लिए असम्भव है. वही भाजपा ने इस पूरे मुद्दे पर विध्वंसकारी रुख अपना कर आग में पेट्रोल डालने का कार्य किया है. वह बड़े शोर-शराबे के साथ देश से भ्रष्टाचार-अपराधीकरण समाप्त करने की घोषणाएं करती है तो भारत की जनता इन अवसरवादी राजनीतिज्ञों पर कैसे भरोसा कर सकती है. आज भारत की राजनीति में व्यापक परिवर्तन की जरुरत है. मगर यह कैसे संभव होगा पर गहराई से विचार करने की आवश्यकता है? यदि इस मुद्दे पर गहराई से सोचकर समीक्षा की जाए तो अन्ना हजारे द्वारा जारी किया गया 'राष्ट्रीय राजनीति परिवर्तन मिशन' में दर्शाए गए प्रावधान देश और समाज हित में उठाया जा रहा सटीक

शेष पृष्ठ पर....12 पर.....

व्यंग्य

एक अनार सौ बीमार

आजकल राजनीति के कन्हैया रत्न खिलौना के लिए 'न काहु से दोस्ती न काहू से बैर' कहावत को चरितार्थ कर रहे है. राजनीति में साझा सरकार का युग चल रहा है. सत्ता में साझेदारी का यह नायाब तरीका आजकल खूब फल-फूल रहा है. प्रतिनिधि नाना के बल चुनाव जीतते हैं और दादा की सरकार चलाने में अपना पौरूष समझते हैं.

बालाराम परमार 'हंसमुख'

भगवान कृष्ण की लीलाओं का कोई सानी नहीं. त्रेतायुग में बचपन में ऐसी-ऐसी लीला कर गए कि लोग इस मानवता विहिन युग में भी वैसी लीला करने को मचलते है. इक दिन न जाने भगवान के मन में क्या आया कि उन्होंने माता यशोदा से चन्द्र खिलौना लेने की हद कर डाली. माता यशोदा ने कृष्ण के बाल मनोविज्ञान को समझा और उन्होंने थाली में पानी भर उसमें चन्द्रमा की परछाई दिखा दी और कहा ''कन्हैया ये रहा तेरा चन्द्र खिलौना.'' कन्हैया के हाथ चन्द्र खिलौना लगा या नहीं, यह तो वहीं जाने, लेकिन आजकल राजनीति के कन्हैया रत्न खिलौना के लिए 'न काहु से दोस्ती न काहू से बैर' कहावत को चरितार्थ कर रहे है.

राजनीति में साझा सरकार का युग चल रहा है. सत्ता में साझेदारी का यह नायाब तरीका आजकल खूब फल-फूल रहा है. प्रतिनिधि नाना के बल चुनाव जीतते हैं और दादा की सरकार चलाने में अपना पौरूष समझते हैं. कभी हाँ कभी ना, कभी खुशी कभी गम, तू डाल-डाल मैं पात पात, न्यूनतम साझा कार्यक्रम के गर्भगृह में पलने वाली सरकार की प्रमुख विशेषता है. इस गठबंधन सरकार में मुखिया की स्थिति 'सात की माँ को सियार खाए' जैसी है. वह न तीन में न तेरह में. सरकार की किरकिरी न हो इसलिए समन्वयक का पद सृजित किया जाता है, जो सभी दलों के नाक का बाल होता हैं. इस बाल को कोई बांका नहीं कर सकता? इधर कई वर्षो से भारत-भू पर कोई माई का लाल भारत रत्न के योग पैदा नहीं हो पाया है!

धरती पुत्रों के साथ साझा सरकारों के घिनौने मजाक से तंग आकर, एक गुदड़ी के लाल ने सरकार को नींद से झकझोरा और पत्र लिखकर कहा-''इस वर्ष का रत्न खिलौना हमारे लाल को मिलना चहिए.' बस फिर क्या था, एक के बाद एक खिालौना माँगने वालों की होड़ लग गयी. किसी ने दादा के लिए माँगा तो किसी ने नाना के लिए. उतावलेपन में प्रभावकारी नेताओं ने तो अपनी पति-पत्नी अथवा पोते-पोतियों के लिए ही खिलौना मांग लिया। राजनीतिक हठ की माया अपरम्पार है. एक कन्हैया खिलौना के लिए क्या मचले, सबके सब एक साथ चें पों करने लगते है. चें-पों भी आठ कनौजिया नौ चूल्हें जैसी. अब मैया करें तो क्या करें? पग-पग का डर. मैया दुखी है. अपने ही लाडलो ने विकट संकट पैदा कर दिया. हर बोले कहते फिर रहे है कि यह दुख तो मैया का ही मोल लिया है. आजकल तो एकल परिवार की चलन है, जहाँ किसी की भी नहीं चलती, वहाँ मैया संयुक्त परिवार की मुखिया बनी बैठी है. मंहगाई के जमाने में ईमानदारी से बच्चों की मांग पूरी नहीं की जा सकती. पता नहीं मैया ने किसकी सलाह से यशोदा माता की युक्ति अपनाई? रत्न खिलौना की परछाई पानी में दिखा दिखा कर सब को शांत करने की चेष्टा की, लेकिन ने एक न मानी. सब ने एक स्वर में कहा-मैया यह तो छलाव है. हमें तो असली रत्न का खिलौना ही चाहिये' जब मैया ने रत्न खिलौना देने से हाथ खड़ा कर दिया तो सबका दिल खट्टा हो गया और धीरे धीरे आपे से बाहर होने लगे. किसी ने माँ की कलाई खींची तो किसी ने मूँह चढ़ा लिया! कुछ ने तो घर त्याग की धमकी दे डाली. कान्वेन्ट में पढ़े लिखे कुछेक कन्हैयाओं ने मैया पर भेदभव का लाँछन जड़ दिया!

मैया के हाथों के तोते उड़ने लगे, पाँव तले की जमीन खिसकने लगी और चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी, तब मन-मोहन याद आया. मैया ने मन-मोहन से कहा-''मोहन प्यारे, विकट घड़ी हैं. रत्न खिलौना मांग की लगी झड़ी है! बताओ क्या करें? रत्न खिलौना है एक और मांगीलाल अनेक? किसें दें, किसे न दें? सब दिल के टुकड़े हैं? एक टुकड़ा भी बिखर गया तो कुर्सी हाथ से चली जाएगी?'' मोहन प्यारे बोले-''पहले यह बताओ मैया, मेरे अलावा भी आपका कोई असली जिगर का टुकड़ा है? मैया बोली-'अरे पगले, कैसी बहकी बहकी

बातें करता है! अगले चुनाव तक तो तू ही मेरा असली फेफड़ा और किडनी है!' 'नहीं मोरी मैया, आप माता यशोदा और कौशल्या की भाँति दर्द को छिपा रही हैं. बड़े भैया और संकट मोचन बहन को आप कैसे भूल रहीं है?' मोहन प्यारे ऐसी आवाज में बोले, जैसे गले में फँसा अटकी हो!!

मैया ने संजय के माध्यम से जब मोहन प्यारे के मर्म को समझा तो बोली- 'मोहन प्यारे तू तो आजकल राजनीति का ज्ञानी हो गया है रे. मैया की मन की बात जानने-समझने लगा है? कच्चे राजनीतिज्ञ ऐसी गलती करते हैं? याद कर, जिसने भी मैया की मन की थाह ली, खिलौना तो दूर, झुनझुने के लिए तरस रहे हैं? मैया के मन की बात जानने की बात करता है और भैया के साथ रहने वाली तेरी भाभी, तेरी बहन के पति तेरे जीजाजी और लव-कुश जैसे भान्जों को भूला बैठा हैं? यदि मैया के मन की बात जान जाएगा तो अगली पाँच पीढ़ियों तक किसी को भी रत्न खिलौना देने को नहीं सोच पाएगा? जल में रहकर मगरमच्छ से बैर मत कर और बता रत्न खिलौना किसे दें?

खग को खग की भाषा समझने में देर न लगी. रत्न खिलौने का मामला कहीं तूल न पकड़ ले, इस गरज से मोहन प्यारे ने आनन-फानन में मौसेरे भाईयों की एक सर्वदलीय बैठक बुलाई. हाथ जोड़, विन्रम भाव से धीमी मधुर आवाज में बोले-'हे मौसेरे भाईयों, धर्म संकट भारी है. विपक्ष के साथ साथ, सहयोगियों को भी रत्न खिलौना मांगने की लगी बीमारी है. भैया बहन का नाम किसी ने नहीं लिया, मन भारी है. किसे दें, किसे न दें तहकीकात जारी है.

'मैया की इच्छा का आदर करना मेरी दिलदारी है. रत्न खिलौना अपने के सिवाय किसी को न दूँ, यह मेरी लाचारी है. मेरी नैया तारों और संकट से उबारो.' मोहन प्यारे की लाचारी पर सब को तरस आया. सबने भगीरथ प्रयत्न करने की सलाह दे डाली. एक स्वर में बोले- 'मन-मोहन हिम्मत न हारो. मैया के ही चरण पखारो.

मैया के आशीर्वाद से साब ठीक हो जाएगा. याद है तुम्हें, पिछली बरस मुखिया के चुनाव के समय तुम पर कितना भारी भरकम संकट आया था. मैया की पैनी दूर दृष्टि और भाई-बहन के पक्के इरादे के चलते संकट, आपदा नहीं बन पाया. रह गए न सब मांगीलाल हाथ मलते!!

मौसेरे भाईयों की आवाज में दम था, क्योंकि एक बार सगा भाई दगा दे सकता है पर मौसेरा कभी दगा नहीं देता है. कहतें है कि हिम्मतें मर्दा मददे खुदा. मोहन प्यारे की सोयी हुई आत्मा जागी और उन्होनें गर्व भाव से घोषणा भी की 'रत्न खिलौना वह गुड़ नहीं है जो चीटीं खाए.' मोहन प्यारे की घोषणा सुनते ही सबके होश फाक्ता हो गए और उन्होनें रत्न खिलौने की मांग को ठीक उसी तरह ठण्डे बस्ते में डाल दिया जैसे नौकरशाह राजनीतिक घोषणाओं को रद्दी की टोकरी में डाल देते है. 'महंगाई का जमाना है, मैया किस-किस को रत्न खिलौना दें.' बुदबुदाते हुए सब अपनी रोजी रोटी में लग गए. मौसेरे भाईयो की सलाह से साँप भी मर गया और लाठी की नहीं टूटी.

-उप प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय
क्र. 1, देहू रोड, पूणे, महाराष्ट्र

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
२. बिक्री की व्यवस्था
३. प्रचार—प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें
प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद—211011
bs&esy% sahityaseva@rediffmail.com

रहीम खानखानाः कालजयी रचनाकार

रहीम अपने पिता की तरह ही शूरवीर योद्धा थे. उनके एक हाथ में क़लम और दूसरे हाथ में तलवार रहती थी. उन्हें छल-कपट, झूठ, दंभ, अनैतिक बातों से नफरत थी. वह संत स्वभाव के सात्विक जीवन पसंद करते थे. वे हिन्दु धर्म के देवी-देवताओं के विषय में भी गहन अध्ययन किए थे. अकबर ने उनकी काब्लीयत देखकर अपने राज्य का मुख्य न्यायोचित सलाहकार के रूप में उन्हें नियुक्त किया था.

✍ कान्ति अय्यर
सूरत, गुजरात

भक्तिकाल और रीतिकाल की श्रृंखला में अनेक भक्तिकालीन कवि अपनी प्रतिमा से सन्तप्त भावना व जीवन शैली से भारतीय संस्कृति को पुष्टि प्रदान की. बिहारी, रसखान, केशव, भूषण, मीरा, सूर के समकालीन अनेक चिरस्थायी वैभव भक्त ही नहीं थे न मात्र दोहा-सोरठा लिखने वाले कवि थे. रहीम का पूरा नाम अर्ब्दुरहीम खानखाना था. वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे. वह राजनीति, नीतिशास्त्र, शिक्षण, युद्धकला एवं जीवन व्यवहार काल के भी गहन अध्येयता एवं निपुण अधिष्ठाता थे.

रहीम का जन्म 1553 ई. मे बैरम खां के घर हुआ था. उस समय वह लाहौर में रहते थे. रहीम अपने पिता की तरह ही शूरवीर योद्धा थे. उनके एक हाथ में क़लम और दूसरे हाथ में तलवार रहती थी. वह समन्वयवादी, मानवतावादी, सांस्कृतिक आदर्शो को मानने वाले थे. उन्हें छल-कपट, झूठ, दंभ, अनैतिक बातों से नफरत थी. वह राजनीति, धार्मिक, सामाजिक व्यवहार में से अंधश्रद्धा, पाखंड, दिखावा नाबूद करना चाहते थे. वह संत स्वभाव के सात्विक जीवन पसंद करते थे. उन्होंने हिन्दु धर्म, देवी-देवताओं के विषय में भी गहन अध्ययन किया था. उनका बाह्यजीवन मुसलमान होते हुए भी मानवतावादी और भारतीय संस्कृति के ज्ञाता एवं पोषक थे. इसी कारण रहीम एक ईमानदार इन्सान थे. उनके अन्दर एक महानपुरुष, विद्वान, योद्धा के सभी गुण व्यवहार में विभूषित थे.

अकबर बादशाह ने रहीम का पालन पोषण, शिक्षा, राजसिक ढंग की व्यवस्था से पुत्रवत काबिल बनाने की कोशिश की थी. अकबर ने उनकी काब्लीयत देखकर अपने राज्य का मुख्य न्यायोचित सलाहकार के रूप में उन्हें नियुक्त किया था.

हुमायूँ ने जिस तरह रहीम के पिता बैरमखां को अकबर की शिक्षा दीक्षा के लिए चुना था. हुमायु के नाम मात्र से पूरे राज्य की जिम्मेदारी, प्रबंधक बैरमखां पर डाली थी. अकबर का अभिभावक भी उन्हीं को नियुक्त किया था. इसी प्रकार अकबर ने सलीम की शिक्षा-दीक्षा का भार रहीम पर डाल कर उन्हें राज धर्म, न्याय, शिक्षा, योद्धा के सभी गुण सिखाने का भार रहीम पर डाला था. अकबर ने रहीम को शाही खानदान के अनुरुप 'मिर्जा खां' की उपाधि देकर राज्य सम्मान दिया था.

अकबर की उदार धर्म निरपेक्ष नीति पर रहीम का गहरा प्रभाव था. रहीम का काव्य आज इक्कीसवी सदी में भी व्यवहारिक है. रहीम की रीतिकाल के अनुरुप दो रचनाएं प्रसिद्ध है- 'नायिका भेद' और 'नगर शोभा'. नायिका भेद में नायिका के विविध रूप भेद का वर्णन है जबकि नगर शोभा में नगर में बसने वाले विविध सामन्तों, धनिकों, वाणिज्य व्यापारियों अन्य वर्णो का वर्णन मिलता है. रहीम ने भक्तिपरक नीतिपरक दोहे व सोरठे लिखे उनके कारण वह जन-जन के प्रिय ही नहीं कर्णधार बन गये. कवित्य की दृष्टि से दोहे मानवजीवन के उत्थान, सत्य, यथार्थ, मनोविज्ञान पर आधारित है. जीवन व्यवहार में मुहावरें, कहावतें एवं लोकोक्तियों के रूप में ग्राम्य जीवन में भी लोक प्रिय है.

रहीम के दोहे सीधे-सादे शब्दों में होते हुए भी उनके बिम्ब की छाया मानव हृदय को छूती हुई अन्तःकरण में उतर जाती है. मौलिकता की दृष्टि से रोचक होते हुए भी कालजयी बन गये हैं. रहीम के दोहे सातवी कक्षा से बारहवीं तक पाठ्यक्रम में सुयोग्य निरुपण किया है जो छात्रों को नीतिपय भावनाओं को पुष्ट करता है. कुछ दोहे प्रस्तुत है-

रहीमन देख बड़ेन को लघु न दीजिये डार
जहां काम आये सुई कहा करे तलवार।
एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय,
रहिमन भूलहिं सीचिंये फूले फले अघाय।

शेष पृष्ठ पर.....18 पर

गुरू गरिमा

नैतिक एवं मानवीय मूल्यों/ सम्बंधों के साथ 'गुरु गरिमा' से कोसों दूर जाने की प्रवृत्ति प्रबल है. स्वयं को जानने मानने के बजाय, बाहरी दुनिया के पीछे भौतिक भाग दौड़ है. जिससे हृदय का स्पंदन शुष्क/अवरुद्ध हो गया है. वैदिक दृष्टि से संसार में 24 गुरुओं की मान्यता है. जो रास्ता दिखा दें, अज्ञानता मिटा दे वह गुरु. सत्सम्प्रदाय निष्ठ, स्थिर बुद्धि, निष्पाप, श्रोत्रिय ब्रम्हनिष्ठ, सदाचारी को ही गुरू बनाना चाहिये

✍ **किसान दीवान**
महासमुन्द्र, छत्तीसगढ़

कलि भल हरनि विषय रस फीकी' पर गौर करें तो हमारी जीवन शैली सर्वथा इसके विपरीत है. कलयुग में कलि (कलह, विकृतियां, भोगवाद) की संलिप्तता. कल यानि कल पुर्जो का युग भी दर्शाता है. कलाकृतियों (सजावट, दिखावा) का भी संकेत है. कल से आशय बीता हुआ या आने वाला अवसर भी सन्निहित है जिसमें वर्तमान को सही बनाने के लिए बीते हुए भले बुरे को तराश कर अपनाने से आने वाला अवसर लाभकारी सिद्ध हो सकता है. परन्तु इस कलयुग में जो बीते हुए से सबक लेकर आने सुअवसर का दर्पण दिखाता है, कुछ भी अपना नहीं रह गया है.

युग चक्र में कलयुग के बाद, सतयुग का प्रावधान है. जिसे नकार कर हम भयंकर भूल कर रहे है. इस समय 'मल' (गंदगी) को त्याग कर (हरनि) भोगवाद को रसहीन जानना अभिष्ट है. संतो के इस संदेश को गोस्वामी तुलसीदास ने रामायण आरती में सुनाया है. ताकि लोग नये युग 'सतयुग' के अनुकूल बन सकें. यह बात कितने लोग समझ पाये? परीक्षण करने पर नगण्य ही मिलेंगे. क्योंकि अन्य नैतिक एवं मानवीय मूल्यों/ सम्बंधों के साथ 'गुरु गरिमा' से कोसों दूर जाने की प्रवृत्ति प्रबल है. स्वयं को जानने मानने के बजाय, बाहरी दुनिया के पीछे भौतिक भाग दौड़ है. जिससे हृदय का स्पंदन शुष्क/अवरुद्ध हो गया है. वैदिक दृष्टि से संसार में २४ गुरुओं की मान्यता है. जबकि शाश्वत और सूक्ष्म गुरू अन्तःकरण है. जिसमें हर पल सीखने जानने की ललक हिलोरें लेता रहता है. सीखने का प्रथम सोपान यह जानने में है कि वह क्या नहीं जानता. इस नहीं जानने की ललक को तृप्त करने वाले बाह्य गुरु होते है. जो जानने सीखने, समझने और अभ्यास कार्य में सहायता करते है.

जो रास्ता दिखा दें, अज्ञानता मिटा दे वह गुरु. सच्चे झूठे गुरुओं की परख पहिचान के कुछ सैद्धान्तिक/ व्यहारिक आकलन है. जैसे कि

पारस में अरु संत में,
बहुत अंतरो जान।
वह लोहा कंचन करें,
वह करे आपु समान।

'सिद्ध सत्संप्रदायेस्थिर धीः श्रोत्रियं ब्रम्ह निष्ठम!'

अर्थात! सत्सम्प्रदाय निष्ठ, स्थिर बुद्धि, निष्पाप, श्रोत्रिय ब्रम्हनिष्ठ, सदाचारी को ही गुरू बनाना चाहिये (श्री वेदान्त देविकन).

हरई शिष्य धन शोक न हरई
सो गुरु घोर नरक मंह परई।

'मंत्री दोखश्च राजानं जाया दोषः पतियथाः।
तथा प्राप्नोत्य संदेह शिष्य पापं गुरूप्रिये।।

जिस प्रकार मंत्री का दोष राजा को, स्त्री का दोष पति को प्राप्त होता है उसी प्रकार निः संदेह शिष्य का पाप गुरू को प्राप्त होता है. (कुलावर्ण तंत्र)

'दापयेत स्वकृतं दोखं पत्नी पापं स्व भर्तरि।
तथा शिष्यार्जितं पापं गुरूमाप्नोति निश्चितम।'

श्रीमद्भागवत, 11वें स्कंध के 6वे 9 अध्यायों में अवधूतोपाख्यान के तहत 28 गुरुओं का उल्लेख है. जिसमें स्पष्ट किया गया है कि जहां भी अच्छे विचार मिले, उन्हें ग्रहण कर लेना चाहिए. किसी एक के पीछे बंधकर नहीं रहना चाहिये. जिससे आत्म कल्याण का सूत्र मिले वह गुरू ही होता है. कहा गया-

मधु लुब्धो यथा भृगं, पुष्पात पुष्पांतर ब्रजेत।
ज्ञान लुब्धोस्तथा शिष्यों, गुरूर्भुवन्तरं ब्रजेत।

जिस प्रकार मधु लोभी भ्रमर एक फूल से दूसरे फूल की ओर जाता है. उसी प्रकार ज्ञान लोभी शिष्य को एक गुरू से दूसरे गुरूओं की ओर जाना चाहिये. (गुरू गीता)

गाय खाती, चुन चुन घास,
देती अमृत सा दूध की धारा।
वैसे ही गुरू लटके, घुटके,
देता सहज ज्ञान उजियारा।

इसी प्रकार गुरू ब्रह्मा, गुरू गोविन्द जैसे सैकड़ों उद्धरण, संदेश हमारे सामने है. जो हमारे साहित्य एवं ग्रन्थों की शोभा बढ़ा रहे है. आचरण से हटते जा रहा है. युगों से समझाया और सिखाया जा रहा है कि सात्विक, सहज और शालीन निर्वाह के लिए सच्चे गुरू

–

कागजी शिक्षा

-रामकृष्ण गर्ग
साकेत नगर, इलाहाबाद

आजकल बराबर यह देखा जा रहा है कि सरकारों द्वारा प्रेषित योजनाएं कारगर नहीं होती। इसका मुख्य कारण योजना बनाने और उसका क्रियान्वयन करने वालों को यह पता नहीं होता कि यह योजना कितनी व्यवहारिक है और इसका क्रियान्वयन कैसे किया जाए। फिर होता यह है कि उसमें आवंटित धन किस प्रकार से खर्च किया जाए। मुझे ऐसा प्रतीत होता है और यह वास्तविकता भी है कि आज की शिक्षा में कर्त्तव्य परायणता तथा परोपकार की भावना दोनों का विलोप हो गया है।

जो शिक्षा मिलती है वो कागजी होती है, व्यवहारिक तो होती ही नहीं. उसका वास्तविकता के धरातल से कुछ भी लेना देना नहीं होता। मुझे ऐसे उदाहरण मालूम है जिसमें एक सिविल इंजीनियर जिसने तकनीकि स्नातक की शिक्षा प्राप्त की परन्तु शिक्षा के दौर में उसे यह ज्ञान नहीं हो पाया कि कंक्रीट क्या होती है, बिटुमिन क्या होता है? इसी प्रकार सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति पर आधारित नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर महापालिका, नगर निगम इत्यादि पढ़ा तो दिए जाते है। विद्यार्थी उसका रट्टू तोता हो जाता है परन्तु व्यवहार में उसको कुछ नहीं आता।

हमारे यहां जो पहले गुरूकुल प्रणाली थी। प्राथमिक शिक्षा की प्रणाली थी उसमें गुरू और शिष्य का सम्बंध बनता था। गुरूजन शिष्य के परिवार से सम्बंध रखते थे। एक आत्मीयता का भाव बनता था और इसका एक सबसे बड़ा उदाहरण मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का राजतिलक होना था और इसके लिए पिता महाराजा दशरथ, गुरू वशिष्ट और समस्त अयोध्यावासी तत्पर थे। राजतिलक की सब तैयारियां हो गयी थी परन्तु एक बिमाता कैकेई, अपने पुत्र को राजा बनाने के लोभ में इस बात पर तैयार नहीं थी। ऐसी परिस्थिति में राम अगर चाहते तो कैकेई के दुराग्रह को अनदेखा कर राजा बन सकते थे परन्तु उन्होंने जन कल्याण हेतु १४ वर्ष के लिए वन जाना स्वीकार किया। इसका संस्कार उनको ऋषि विश्वामित्र के साथ रहकर प्राप्त हुआ था।

आज की शिक्षा में व्यक्ति, व्यक्ति न रहकर रोबोट यानि यांत्रिक मानव के स्वरुप में ढ़लता जा रहा है और जिससे योजना बनाना और उनका क्रियान्वयन का मानवता की भलाई से कोई सम्बंध नहीं रह जाता। इसका सबसे बड़ा उदाहरण अभी हाल ही में प्रयाग नगरी में महाकुम्भ में देखने को मिला कि एक ओर तमाम भूमि मेला क्षेत्र में जनविहिन रही और सड़कों पर, रेलवे स्टेशन पर इतनी भीड़ हो गई कि 10 फरवरी 2013 जैसे दुर्घनाएं हो गई।

क्या हम मनुष्य होकर मनुष्य बने रहना नहीं सीख सकते है। भाई पहले हम मनुष्य है उसके बाद और कुछ है। आखिर यह यांत्रिक मानव बनाने की प्रक्रिया कैसे व्यक्ति को मानव बनाने में बदलेगी आज सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है।

की जरूरत होती है. सार्थक ज्ञान से अंतः करण भी पवित्र होगा और विषय भोग में अरुचि होगा. आत्म उत्थान का ध्येय बनेगा. तभी कलि मल का हरण होगा और समाज, परिवार में ही स्वर्ग सुख मिलेगा. परन्तु भोगवादी परम्परा में नीति-धर्म-शौर्य, योग्यता, कुशलता, सब अर्थोपार्जन से कारगर माना जा रहा है. नैतिकता और आत्मशोधन का अभाव, गुरू महत्ता को विस्मृत कर रहा है. जिससे अभिशप्त जीवन जीने की बाध्यता है.

पृष्ठ 07 का शेष........

अब भरोसे लायक

व उचित कदम लगता है. क्योंकि आज देश की राजनीति को ऐसे ही कठोर अनुशासनात्मक विधानों की जरुरत है. ऐसा लगता है वर्तमान राजनीति में सार्थक लोकपाल विधेयक पारित करवाने के लिए न तो सरकार तैयार होगी और ना ही सत्तारूढ़ मंत्री, सांसद ही ऐसा चाहेंगे कि सशक्त कारगर लोकपाल बने और लागू हो सके. यदि सत्तारूढ सरकार लोकपाल बिल पर राज्यसभा में मतविभाजन करवाती तो संभवत वह पारित भी हो सकता था लेकिन लुंज-पुंज. जरुरत है आगामी चुनावों में स्वच्छ छवि के राजनीतिज्ञों व दलों को मतदान करने की ताकि जनता का शासन स्थापित हो सके.

पूर्व संस्कार, माता-पिता के विचार एवम् परिस्थितियों के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव निर्मित होता है. इसी आधार पर वह दयालु, कठोर, डरपोक, सात्विक या तापसी होता है. -दाउजी

यात्रा के क्षणों में

जीवन एक यात्रा है. लम्बी और अनंत यात्रा. महबूबनगर शहर से १० किलोमीटर की दूरी पर पिलमरी चेट्टल (वट वृक्ष) है. यह विशाल वट वृक्ष ३ एकड़ भूमि में फैला हुआ है. यह कहाँ से शुरु हुआ किसी को नहीं मालूम. यह ७०० साल पुराना है.

✍श्रीमती संपत देवी मुरारका
हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश

जीवन एक यात्रा है. लम्बी और अनंत यात्रा. यात्रा का आनन्द ऊँचाइयों को छूने, घूमावदार रास्तों का चक्कर लगाने और तेज और गहरी नदियों को पार करने और उनमें स्नान करने का जो आनंद आता है, वह भुला नहीं पाते है. ऐसी ही एक यात्रा जो मैंने मेरी ननद (विजय लक्ष्मीजी काबरा) के साथ की जो रोम-रोम में छिपी प्रसन्नता और उत्साह को आस-पास बिखेर देने वाली यात्रा है.

तारिख 26.11.2004 को मैंने और विजयलक्ष्मी जी काबरा दोनों ने यह तय किया था कि कार्तिक पूर्णिमा (देवी दिवाली) को कहीं भी स्नान करने जायेंगें. 16 सीटर की गाड़ी से हम सभी 14 लोग यात्रा करने निकले. सुबह जल्दी जाना है सोचकर जल्दी तैयार होकर सुबह-सुबह अपनी ननद के घर गई. 7 बजे बिचपल्ली (गढवाल) में कृष्णा नदी के स्थान के लिए रवाना हुए. सर्वप्रथम हम 30 किमी कोत्तुर पहुँचे. फिर वहॉ से सादनगर 40 किमी. की यात्रा पूरी की. वहॉ श्री बालाजी लक्ष्मी माता गोदादेवी के दर्शन किये. मन्दिर चार सौ साल पुराना है. वहॉ श्रीबालाजी लक्ष्मी माता गोदादेवी के दर्शन किये. मन्दिर चार सौ साल पुराना है. वहॉ श्री नरसिम्हा स्वामी, श्रीरंगनाईक, श्री रामुलावारी के भी दर्शन किए. फिर हम ने काबरा जीके रिश्तेदार के यहॉ जाकर चाय नाश्ता किया. सादनगर से हम सभी महबूबनगर गये. महबूबनगर शहर यहॉ से 6 किलोमीटर पर है. उसके बाद 4 किमी. दूसरी ओर गये जहॉ पिलमरी चेट्टल (वट वृक्ष) है. यह विशाल वट वृक्ष 3 एकड़ भूमि में फैला हुआ है. यह कहॉ से शुरु हुआ किसी को नहीं मालुम. यह 700 साल पुराना है.

वृक्ष का मतलब पानी, पानी का मतलब भोजन है. बढ़ता हुआ वृक्ष जीवन का प्रतीक है जो देश को उन्नति के रास्ते पर ले जाता है. मुझे प्रकृति से प्यार है.

ऐसी मान्यता है कि वृक्ष के धड़ को छूकर जो भी इच्छा की कामना की प्रार्थना करते है, वह अगर पूरी होती तो जब तक जिन्दा रहें, हर साल आप अपनी पसंद का एक वृक्ष लगाइये. हमने वृक्ष के साथ ग्रुप फोटो ली. सभी के साथ खाने का सामान था. थोड़ा निकालकर खाया. जिसका व्रत था उन्होंने नहीं खाया. थोड़ी देर विश्राम किया फिर अपने गंतव्य की ओर बढ़े. पहला पिल्लमरी (वट वृक्ष) महबूबनगर में है. ऐसे वट वृक्ष चारों शहरो में है. दूसरा मद्रास में थियोसिफकल सोसायटी के बगीचे के अन्दर है. तीसरा अनन्तपुर जिले मे हैं. चौथा कलकत्ता में है. हमारी गाड़ी खेत खलियानों से होती हुई घुमावदार सड़कों पर अपनी रफ्तार से चल रही थी. सूरजमुखी फूलों की खेती बहुत सुन्दर लग रही थी. सुरजमुखी फूल सीना ताने खड़े थे. हम सभी 160 किमी की दूरी तय किये. गद्वाल में बिचपल्ली गॉव है वहॉ कृष्णा नदी है. कृष्णा नदी के घाट पर जाकर सभी ने स्नान किया. वट वृक्ष की पूजा की. यहॉ शिवजी का मन्दिर है. नजदीक ही रामजी सीताजी लक्ष्मणजी की काले पत्थर से बनी मूर्तिया खड़ी है. श्रीराम मन्दिर अलग से भी है वह बड़ा मन्दिर है. दर्शन करने गये जब पट बन्द थे. वहॉ की परिक्रमा में एक पेड़ के नीचे बैठकर सभी ने खाना खाया. थोड़ा विश्राम किया. करीब तीन बजे भूतपूर्व रेल राज्य मंत्री भण्डारु दत्तात्रेय जी दर्शनों के लिए आए थे तब मन्दिर खोल दिया गया. हमने दर्शनों का लाभ लिया और भण्डारु दत्तात्रेयजी से बातचीत की और उनके साथ तस्वीरें भी ली. हम सभी गाड़ी में बैठकर आलमपुर के लिए निकले. अंदाजा 200 किमी. या 220 किमी की दूरी हैदराबाद से आलमपुर है. आलमपुर तुंगभद्रा नदी के तट पर बसा है. मन्दिर बड़ा है और बहुत पुराना है. यहॉ अर्कलाजिकल म्यूजियम है. पुरातत्व संग्रहालय-इस संग्रहलाय में 12वी सदी की 11वी सदी की मूर्तियों का संग्रह हैं.

एक नंदी की मूर्ति विश्व प्रसिद्ध है जिस पर शिवजी पार्वतीजी बैठे हुए हैं. यह एक ही मूर्ति है पूरे विश्व में और कहीं नहीं है. नटराज की मूर्ति भी बहुत सुन्दर हैं. संग्रहालय देखने के बाद मन्दिर गये. मन्दिर में बाल ब्रह्मेश्वर स्वामीजी का (शिवाजी) का लिंग है. अन्दर जाने नहीं देते हे. शाम हो जाने की वजह से शायद अन्दर नहीं जाने देते होगें. पुजारी जी शाम को पूजा कर रहे थे. दूर से दर्शन किये फिर माता के मन्दिर गये. माता का नाम जोगलेश्वरी माता और रुक्मणी माता है. रेणुका माता भी है. कहा जाता है कि यहॉ जो भी माता की पूजा करता है, तो जिनके बच्चे नहीं है उनको एक या दो साल में बच्चे जरुर हो जाते है. कर्नूल से अंदाजा 15 किमी. पहले है. तुंगभद्रा डेम कर्नूल में है और आलमपुर में डेम के पीछे में जोगलम्बा माता का 18 शक्तिपीठ इस प्रकार है-1. लंका में सांकरी देवी, काचीपुरम में कामाक्षी, प्रद्मना में श्रृंखला देवी, क्रांचापट्टणम में चामुण्डा, आलमपुर में जागलम्बा, श्रीशैलम में ब्राहमरांबिका, कोल्हापुर में महालक्ष्मी, महुर्ये में एकवीरा, उज्जैन में महाकाली, पीठीकायाम् में पुरोहितका, उद्यायाम में गीरिजा देवी, द्रक्षवाटिका में माणिक्या, हरिक्षेत्र में कामरूपी, प्रयाग में माघवेश्वरी, ज्वालायाम् में वैष्णवी देवी, गया में मांगल्यागौरी, बनारस में विशालाक्षी और कश्मीर में सरस्वती देवी है. हम सभी मन्दिरों के दर्शन करने के बाद थोड़ी सीढ़िया चढ़कर तुंगभद्रा नदी के दर्शन किये. काफी नीचे जाना था. हमारी एक दिन की यात्रा का अन्तिम पड़ाव था. दर्शन करके वापस घर पहुंचने की जल्दी लग गई. शाम हो गई थी. दीये प्रज्वलित हो गये थे. दर्शन करके वापस गाड़ी में बैठे. गाड़ी अपनी रफ्तार से चल रही थी. सूरजमुखी फूल उदास और झुक गये थे. दूसरी तरफ बहुत दूर खेत में सॉईबाबा का मन्दिर था. जगह का नाम मालूम नहीं वहॉ पर सवा लाख दीप प्रज्जवलित किये गये थे. हमारे ग्रुप में से 4—5 औरतें दीप प्रज्जवलित करके आई. थकान और अन्धेरे के कारण मैं नहीं जा पाई. चाय पिये और वापस घर अन्दाजा 11 बजे पहुँचे. इस दिन की यात्रा का वर्णन ऑखों में संजोये सो गई. बहुत ही अच्छा और सुखद दिन बीता था. यह शुभ दिन अविस्मरणीय रहेगा.

आखिर हम कब सुधेरेंगे

प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार, राष्ट्रीय नेता, अगुवा की छवि बनाने को प्रयासरत नरेन्द्र मोदी को केवल उत्तराखंड में गुजरात की जनता पीड़ित दिखाई दी. उनके लिए गुजरात ही पूरा देश है.

आवश्यकता है

हिन्दी साप्ताहिक **का बा चर्चा**

हेतु विभिन्न शहरों में संवाददाताओं, विज्ञापन प्रतिनिधियों, शहर/तहसील/जिला व राज्य स्तर पर ब्यूरो प्रमुख की.

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

10 रीवा बिल्डिंग, लीडर रोड इलाहाबाद-211001

मोबाईलः 9935396715, 9335155949

विश्व स्नेह समाज के 10 वार्षिक सदस्य बनायें और 250/-रुपये की पुस्तकें उपहार में पायें.

10 सदस्यों के नाम व पते सहित रुपये 1100/मात्र की राशि धनादेश/ड्राफ्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें।

विश्व स्नेह समाज मासिक,

एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.

लक्ष्य प्राप्ति के लिए अनिवार्य है विरोधी भावों का त्याग

लक्ष्य एकदम स्पष्ट होना चाहिए. लक्ष्य को कागज़ पर लिख कर अपने पास रख लें. इसे बार-बार देखें. जितनी बार इन्हें देखेंगे, मन में अवश्य दोहराएँगें और आपकी लक्ष्य प्राप्ति सरल होगी. लक्ष्य प्राप्ति में लक्ष्य के विरोधी भावों का त्याग भी अनिवार्य है. मन में लक्ष्य की सफलता को लेकर न केवल संदेह ही नहीं पैदा होना चाहिये.

✍सीताराम गुप्ता
पीतमपुरा, दिल्ली

जीवन में आगे बढ़ने के लिए अथवा निरंतर सफलता की ओर अग्रसर होने के लिए जीवन में महान लक्ष्यों का होना भी अनिवार्य है. लक्ष्यों के बिना हम आगे कैसे बढ़ेगें लेकिन प्रश्न उठता है कि महान लक्ष्यों को प्राप्त कैसे किया जाए? लक्ष्य सिद्धि के लिए निम्नलिखित तत्वों की ओर ध्यान देना अनिवार्य है:

सबसे पहले हम अपना लक्ष्य निर्धारित करें कि हमें करना क्या है? लक्ष्य एकदम स्पष्ट होना चाहिए. एक विद्यार्थी को चाहिये कि वह स्कूल की फाइनल कक्षा की परीक्षाओं के बाद निश्चित कर ले कि उसे किस क्षेत्र में जाना है. उसे विज्ञान, कामर्स अथवा कला किस क्षेत्र में आगे बढ़ना है. विज्ञान में भी मेडिकल में जाना है अथवा इंजीनियरिंग में यह निश्चित करना बहुत जरुरी है. हमें नौकरी करनी है अथवा व्यापार या अन्य क्षेत्र विशेष में जाना है. यह निश्चित करना बहुत जरुरी है. यदि लक्ष्य डावांडोल होगा तो सफलता भी संदिग्ध रहेगी.

सबसे पहले लक्ष्य को निर्धारित कर उसे कागज़ पर लिख कर अपने पास रख लें अथवा डायरी में लिख लें. डायरी लिखना या प्लानर मेंटेन करना एक उपचार पद्धति ही है. जब हम दैनिक, साप्ताहिक, मासिक या अन्य अवधि विशेष में सम्पन्न किये जाने वाले कार्यक्रमों को लिख लेते हैं तो लिखने के साथ ही इसकी प्रोग्रामिंग हमारे मन द्वारा हमारे मस्तिष्क में हो जाती है और डायरी में लिखे कार्य हमें बिना डायरी देखें भी प्रायः उचित समय पर आभासित हो जाते है. ये एक प्रकार की स्वीकारोक्ति या संकल्प ही तो है जो हमने कागज़ पर लिख लिया है.

दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व है लक्ष्य को न भूल जाना अर्थात् आपका लक्ष्य निरंतर आपके मन में बना रहे और इसके लिए आवश्यक है कि आप अपने लिखे हुए कागज़ को अपने पास रखें और बार-बार देखते रहें. या फिर अपने निर्धारित लक्ष्य को कागज़ पर लिख कर एक जैसी कई प्रतियाँ तैयार कर लें और उनको घर या कार्य करने के स्थान पर इतनी ऊँचाई पर लगा दें जिससे वे आपको बार-बार दिखलाई पड़े. लिखाई साफ मोटी होनी चाहिए ताकि दूर से भी आसानी से पढ़ी जा सके. कागज़ यदि सुंदर और रंगीन है तथा रंगीन अक्षरों में लिखा है तो उसकी प्रभावोत्पादकता कई गुना बढ़ जाती है. जितनी बार आप इन्हें देखेंगे, मन में अवश्य दोहराएँगें और आपका कार्य अर्थात् अपेक्षित लक्ष्य प्राप्ति सरल हो जाएगा. जब लक्ष्य आपके सामने है और उसे प्राप्त करने के लिए आप कृत-संकल्प हैं तो प्रयास भी अवश्य करेंगे. अगर आप अपनी डायरी में प्रतिदिन इतना भर लिखें ले "मैं बहुत प्रसन्न हूं" अथवा "मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूं." तो आप सचमुच ऐसे ही हो जाएंगें. लक्ष्य को याद रखने का एक उपाय और भी है और वो ये है कि आपसे बार-बार आपके लक्ष्य में प्रगति के विषय में पूछते रहेंगे और आपको याद आता रहेगा तथा साथ ही यह लक्ष्य प्राप्त करना आपके लिए प्रतिष्ठा का कारण बन जाएगा. आप अधिकाधिक उत्साह से लक्ष्य प्राप्ति में जुट जाएंगें.

लक्ष्य प्राप्ति में लक्ष्य के विरोधी भावों का त्याग भी अनिवार्य है. मन में लक्ष्य की सफलता को लेकर न केवल संदेह ही नहीं पैदा होना चाहिये अपितु लक्ष्य के विरोधी भाव किसी भी प्रकार मन में आने पाएँ. श्रद्धा और विश्वास के साथ लक्ष्य को याद रखना और उसकी पूर्णता के लिए पूरी तरह आशावादी होना जरूरी है. आपका लक्ष्य आपकी इच्छा ही तो है उत्कट इच्छा, जिसे पूर्ण करने के लिए आप कृतसंकल्प है. तो आपका लक्ष्य एक संकल्प के रूप में सामने है. इस संकल्प की मूल भावना का विरोधी भाव मन में हरगिज न आने पाए. प्रायः हमारे संकल्प की मूल भावना के विरोधी भाव ही नये विरोधाभासी संकल्प के रूप में उपस्थित होकर हमारे मुख्य संकल्प को क्षीण या तटस्थ करके लक्ष्य पूर्ति में बाधक बनते हैं. जब भी कोई

विरोधी भाव या नकारात्मक विचार मन में आए उसे नकार दें. मन में आए विरोधी भाव का भी विरोधी भाव सकारात्मक स्वीकारोक्ति के रूप में दोहराएँ. विरोधी भावों से बचने के लिए वास्तव में लक्ष्य को एक स्वीकारोक्ति के रूप में बार-बार दोहराएं तथा आंखे बंद करके उसको कल्पना चित्र के रूप में देखें.

लक्ष्य प्राप्ति में लक्ष्य की सीमा निर्धारित करना भी जरुरी है. यह सीमा कुछ घंटे, दिन, सप्ताह अथवा महीने हो सकती है. अपने लक्ष्यों को हम अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन में भी वर्गीकृत कर सकते हैं. जैसा लक्ष्य वैसी समय सीमा लेकिन व्यक्तिगत लक्ष्य पूर्ति के लिए किसी भी स्थिति में यह सीमा सामान्यतः दो वर्ष से अधिक नहीं होना चाहिये.

जो अल्पकालीन लक्ष्य हैं उनकी प्रातः एक सूची बना लें और उसे दिन में दो-तीन बार देख लें. शाम को आप पाएँगें कि अधिकांश कार्य पूर्ण हो चुके है. शेष बचे कार्यो को अगले दिन की कार्य सूची में सबसे पहले लिख लें और उपरोक्त क्रिया दोहराते रहें. दीर्घकालीन लक्ष्यों को ऊपर बताए गए तरीके से मोटा-मोटा लिखकर अपने आस-पास टांग दें या चिपका दें.

अब यह प्रश्न उठता है कि एक बार में कितने लक्ष्य निर्धारित करें? जहां तक रोजमर्रा के कार्यो या अल्पकालिक लक्ष्यों का प्रश्न है इसकी संख्या कितनी भी हो सकती है लेकिन दीर्घकालिक लक्ष्यों की संख्या सीमित होनी चाहिये. एक बार में एक-दो या अधिकाधिक तीन लक्ष्य लेकर चलें. क्योंकि अधिक लक्ष्यों को एक साथ ऊर्जस्वित करने से प्रति लक्ष्य कम ऊर्जा मिल पाएगी. मान लीजिए कि आप एक लेखक हैं तो आप एक बार में एक ही पुस्तक लिखने का लक्ष्य निर्धारित कर उस पर कार्य शुरू करें. पांच-सात पुस्तकें एक साथ प्रारम्भ करना कदापि उचित नहीं होगा. आप कम विषयों और कम भाषाओं तक ही सीमित रहें तो अच्छा है. विशेषज्ञता क्या है? एक ही विषय पर अधिकाधिक कार्य करने का संकल्प अथवा जीवन के लिए लक्ष्य निर्धारण. लक्ष्यों का स्तर क्या हों? पहले अपेक्षाकृत सरल ही विषय पर अधिकाधिक कार्य करने का संकल्प अथवा जीवन के लिए लक्ष्य निर्धारित. लक्ष्यों का स्तर क्या हो? पहले अपेक्षाकृत सरल लक्ष्यों को निर्धारित कर सफलता प्राप्त करें. इससे आप में विश्वास का निर्माण होगा. बाद में मुश्किल लक्ष्यों को लें. इससे आपके विश्वास के स्तर में लगातार वृद्धि होती चली जाएगी. हर लक्ष्य सिद्धि का सीधा संबंध आपके विश्वास के स्तर के अनुकूल ही होगा.

जीवन में सफलता के लिए लक्ष्य निर्धारित करें न कि असफलता के लिए. जीवन में ऐसा लक्ष्य निर्धारित न करें जिस पर आप खुद विश्वास करने को तैयार न हों. आपके विश्वास का स्तर आपकी लक्ष्यपूर्ति में बहुत महत्वपूर्ण है. यदि आप कोई लक्ष्य निर्धारित करके कहते हैं कि ये कभी पूरा तो होगा नहीं तो यहां भी आपका विश्वास अवश्य काम करेगा परन्तु विपरीत दिशा में विश्वास का उपयोग न करें.

हर सफलता को अपने विश्वास से जोड़ने का प्रयास करें. इससे आपके विश्वास में वृद्धि होगी और आपको अगले लक्ष्यों की प्राप्ति में अपेक्षाकृत शीघ्र सफलता मिलेगी.

आपने जो लक्ष्य अपने मन की शक्ति अर्थात् आध्यात्मिक ऊर्जा के सहयोग से पूर्ण किए हैं उनकी पूर्णता पर आपको अपार हर्ष होता है. यह हर्ष आपके शरीर में जो आनंद की तरंगे उत्पन्न करता है अथवा हर्षानुभूति के कारण आपके शरीर में जिन लाभदायक हार्मोंस का स्राव होता है वो शरीर को एक नई दिशा देते हैं. अर्थात् हमारे शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता को उन्नत कर हमें नीरोग बनाए रखने तथा रोग-मुक्त करने में सहायता करते हैं. यदि उपरोक्त विधि से हम मनमाफिक कोर्स में प्रवेश, व्यवसाय या नौकरी आदि प्राप्त कर लेते हैं तो हमें अपनी रुचि के क्षेत्र में अध्ययन या कार्य करने में अधिक आनंद प्राप्त होता है. पसंदीदा क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त कर हम और आगे बढ़ पाते हैं. इस प्रकार लक्ष्य सिद्धि अथवा समस्याओं का समाधान एक उपचारक क्रिया ही है.

यदि आप साधनों की सीमितता में विश्वास रखते हैं तो उसी के अनुसार लक्ष्य निर्धारित करें और यदि आपका विश्वास ब्रह्माण्ड की असीम प्रचुरता में है तो कोई भी लक्ष्य प्राप्त करने में कठिनाई नहीं आएगी.

वैसे तो हर लक्ष्य सिद्ध आपके लिए स्वास्थ्यवर्धक है लेकिन उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति भी आप अपना एक लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं.

जनसंदेश

यदि केन्द्रीय सरकार/सरकारी बैंक/केन्द्रीय सरकार के उपक्रम का कोई भी अधिकारी घूस माँगे तो फोन करें:-एस.पी. सीबीआई, लखनऊ -0522-2201459, 2622985 और एस.एम.एस 9415012635

समाज को समर्पित पतविन्दर सिंह

इलाहाबाद. बहुत कम ही लोग ऐंसे होते है कि समाज में जो दूसरों के लिए जीते है जिनका अपना कुछ नहीं होता.

उन्हें तों मात्र एक ही धुन और लग्न हुआ करती है कि किस तरह से लोक कल्याण और समाज सेवा के कार्य उनसे होते रहे, वे सदैव दूसरो के लिए जिते रहे.

ऐसे ही लोगों में एक नाम है इलाहाबाद के नैनी क्षेत्र में जन्मे पतविन्दर सिह. इलाहाबाद जिला युवा पुरस्कार, सातवें रेड एण्ड व्हाइट बहादुरी पुरस्कार से सम्मानित पतविन्दर सिह १३वर्ष की अल्प आयु सें ही समाज सेवा के क्षेत्र मे उतर कर बरबस ही सबको अपनी ओर आकर्षित किया. जिसने समाज सेवा का व्रत लिया फिर ये नही देखा कि लोंग क्या कहेगे. ऐसे लोग अपनी धुन और ध्यान के पक्कें होते है और निकल पडते है कर्तव्य पथ पर और पहुँच जाते है. उनका कहना है कि शोषित पीड़ित जनता के दर्द को बन्द कमरे में नही बल्कि उनके बीच खड़े होकर उनके दर्द मे शामिल होकर समझा जा सकता है. जनसंख्या नियन्त्रण, पर्यावरण संरक्षण, मतदाताओ में जागरूकता, नशे से परहेज, गंगा नदी की स्वच्छता जैसे लोक कल्याणकारी जैसे कार्यक्रमों मे सक्रिय भागीदारी निभानें के लिए पतविन्दर प्रयासरत है अपने संवेदनशील और शांतिमय आन्दोलन के साथ.

सैफियन्ट संस्थापन, 'बाबी युवा क्लब' और कई सस्थानो से जुड़े हुए है. चाहे दहेज लोभियो के खिलाफ जन-जागरण हो या एडस बीमारी से बचने के लिए उपाय बताना, सड़क सुरक्षा, पर्यावरण की रक्षा के लिए जागरुक करना, बाल शिक्षा एंव अनौपचारिक शिक्षा, विद्यालय न जाने वाले बालको को समझाने के लिए दीवार लेखन से वातावरण को सृजित करते रहते है.

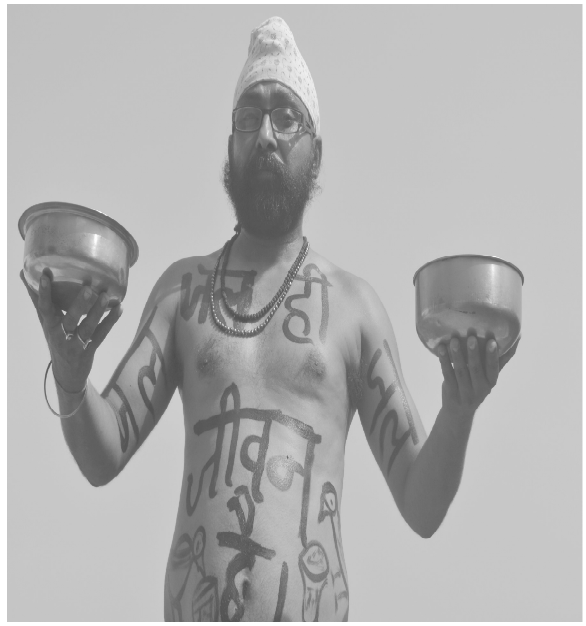

गरीबी उन्मूलन के प्रति ग्रामीण एंव मलिन बस्तियो मे जागरूकता अभियान चलाना, 1998 में राष्ट्रीय एकता एवम्र अखण्डता के लिए देश भक्ति सदेश को अपने खून से अपनी टी शर्ट मे लिखकर तपती धूप मे शहर व ग्रामीण क्षेत्रो का भ्रमण किया और जिला कचहरी मे उपवास रखा.

गंगा नदी की पवित्रता तथा स्वच्छता के लिए पतविन्दर ने अनोखे ढंग की वेशभूषा मे रहते हुए घूम-घूम कर कूड़ाकचड़ा झोले में इकट्ठा कर जनमानस को संदेश देना, पोलियो उन्मूलन के जन जागरण अभियान का नेतृत्व किया.

कारगिल मे पाकिस्तानी घुसपैठ के विरोध मे नई दिल्ली स्थित पाकिस्तान उच्चायोग के समीप 22 जून को पाक विरोधी नारे लिख कर अनोखा प्रदर्शन किया. पैरो में पड़े छालो से बेखबर पतविन्दर सिह मे देश प्रेम का जज्बा देखकर लोगो ने दॉतो तले अंगुली दबा ली.

लखनऊ विधान सभा के समीप भारतीय सैनिको के हौसला अफजाई के उद्देश्य से 7 जुलाई को अर्द्ध नग्न शरीर पर नारे लिखकर (वीर जवानो तुम्हे प्रणाम, सारा देश आप के साथ) के नारे अपने नग्न शरीर पर लिखे युद्ध लड़ रहे भारतीय सैनिको के हौसला अफजाई करने की अपील की

देश में पुरूषों के मुकाबले महिलाओ की घट रही संख्या को ध्यान रखते हुये कन्या भ्रूण हत्या कों रोकने के बारे में जाग्रत करने के लिए फोल्डर वितरण कर इलाहाबाद, लखनऊ, चडीगढ में जन सम्पर्क व प्रदर्शन कर दिवार लेखन से वातावरण को सृजित किया है.

गुजरात, उड़ीसा के तटवर्ती सौराष्ट्र क्षेत्रो मे आये चक्रवर्ती तूफान में प्रभावित लोगो को मदद करने के लिए अपील कर जिलाधिकारी के माध्यम से राहत सामग्री भेजी.

पूर्व संस्कार का प्रभाव पड़ता है, किन्तु देखने में आता है कि प्रबल प्रेरणा वाले व्यक्ति पर माता-पिता एवम् परिस्थितियों का प्रभाव त्यागकर जो बनना चाहते हैं वही बन जाते हैं.

जिसकी आत्म प्रेरणा विकसित होती है, उस पर किसी बात का कुप्रभाव नहीं पड़ता है. परिस्थितियों के प्रभाव को त्याग कर वह मनोवांक्षित प्रकाार का व्यक्ति बन जाता है.

चिन्ता करने से क्या लाभ, इससे मानसिक अस्तव्यस्तता के साथ-साथ शारीरिक क्षय होता है. चिन्ता ग्रस्त मानव प्रत्येक क्षेत्र में असफल होता है, चिन्ता से मनुष्य का विनाश शीघ्र होता है. जैसे लौकोक्ति है कि चिन्ता ही चिता है.

जो बीत चुका उसका पछतावा क्या? वर्तमान को सुधारों, ताकि तदनुरुप इच्छित भविष्य का निर्माण हो. नवश्रृजन आत्म तुष्टी है.

पृष्ठ १० का शेष...

रहीम खानखानाः...

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति,
विपत्ति कसौटी जे कसे, तेइ सांचे मीत।।
तरुवर फल नहिं खात हैं सरोवर पियहिं न पान
कह रहीम पर काज हित सम्पति संचय सुजान।
थोथे बादर क्वार के ज्यों, रहीम घटरात
धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछली बात।
रहिमन धागा प्रेम का इसे न खीचों जात
टूटे फिर न मिले, मिले तो गांठ परिजात।
रूठे सुजन मनाइये, जो रुठें सौ बार
रहिमन फिर फिर पोहिये, टूटे मुक्ताहार।
अब रहीम मुश्किल पड़ी, गाढ़े दोऊ काम
सांचे तो जग नहीं, झूठे मिले न राम।

पत्रिका के प्रकाशन के १२वर्ष पूरे होने पर विशेष प्रस्ताव

सदस्यता ग्रहण करें और सदस्यता शुल्क के बराबर मूल्य की पुस्तकें मुफ्त प्राप्त करें

सदस्यता प्रपत्र

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज का, एक साल, 5 साल, आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद/धनादेश/चेक/बैंक ड्राफ्ट/पे इन स्लिप द्वारा भेज रहा/रही हूं. कृपया मुझे 'विश्व स्नेह समाज' के अंक नियमित रूप से भिजवाते रहें.

1. बैंक ड्राफ्ट क्रमांक..............................दिनांक...........
बैंक का नाम..
2. धनादेश क्रमांक...............................दिनांक...........

हस्ताक्षर

नाम :...
पता :...
....
.....पिन कोड..........
दूरभाष/मो0.........................ईमेलः..............................

<u>विशेष नियमः</u>

01 नवीकरण हेतु शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें, जो पत्रिका भेजते समय आवरण लिफाफे पर आपके नाम के ऊपर लिखा होता है.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें. उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें.
03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाएगा व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाएगा.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10/–	$ 1.00/
वार्षिक	रु0 110/–	$ 5.00/
पाँच वर्ष :	रु0 500/–	$ 150/
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/–	$ 350/
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/–	$ 1500/

विश्व स्नेह समाज(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011, उ.प्र. ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

हँसना मना है

सड़क पर एक गधे के लात मारने के कारण एक महिला की सास मर गई कुछ देर में वहां सैकड़ो औरतें जमा हो गई. भीड़ देखकर एक साहब ने कारण पूछा तो गधे के मालिक ने सारी घटना कह सुनाई. वह व्यक्ति बोला-फिर तो तुम बहुत परेशान होंगें.

गधे के मालिक ने उत्तर दिया-जी हां परेशानी की बात ही है मैं यह फैसला नहीं कर सकता हूँ कि गधा किसको बेचूं, क्योंकि सारी औरतें मेरा गधा खरीदने आई हैं.

एक होटल पर तख्ती लटकी थी. आप जो चाहे खा सकते है, बिल आपके पोते अदा करेंगे. हामिद और आसिफ दोनों भाइयों ने जब तख्ती को पढ़ा तो तुरन्त होटल में घुस गये और जब जी भरकर खा पी चुके तो वेटर ने 105 रुपये का बिल उनके सामने पेश कर दिया. दोनों भाई पहले तो चौके फिर उस तख्ती के विषय में कहा.

वेटर बोला-ठीक है, परन्तु यह बिल आपके दादाजान का है.

एक व्यक्ति शराब पीकर देर से घर लौटता था जिसके कारण उसकी पत्नी परेशान थी. एक दिन वह भी अपनी पति के साथ गई. होटल में उसने वेटर को वहीं चीज लाने का आर्डर दिया जो उसका पति पीता था. जब वेटर द्वारा लाई हुई शराब उसने पी तो मुंह बनाते हुए बोली-ओह, यह तो बहुत कड़वी है. और तुम समझती थी कि मैं यहॉ मजे उड़ाता हूँ. व्यक्ति ने कहा.

मोहन की पत्नी रोज उससे नये कपड़ो के लिए झगड़ा किया करती थी. एक दिन वह बोली-मुझे नयी साड़िया लाकर दो वरना मैं मायके चली जाऊंगी. और वापस आओ तो मेरे लिए सूट का कपड़ा लेती आना. मोहन ने प्रसन्न होकर उत्तर दिया.

मालिक-हमें अपने दफ्तर के लिए एक ऐसे व्यक्ति की जरुरत है, जो निडर, निर्भिक, साहसी और बहादुर हो. किसी बात पर कान न धरे. बस अपनी धुन का पक्का हो. सदा अपने रास्ते पर चले और किसी रुकावट से न डरे.

मैनेजर-जनाब, कल मैं ऐसे व्यक्ति को लेकर आऊंगा, जिसमें सब गुण होंगे.

मालिक-कौन है वह.

मैनेजर-वह बस का ड्राइवर है और तेज गाड़ी चलाने के अपराध में कई बार पकड़ा जा चुका है.

सेठजी-तुम सफाई करते हुए अपने काम से काम रखा करो. आज फिर तुम मेरी अलमारी को घूर रहे थे.
रामू-मैं अपने काम से काम रखता हूँ. आपने ही कहा था कि जहां भी सफाई करनी हो, वहां नजर रखा करों.

आवश्यक सूचना

पत्रिका के १२वर्ष पूरे करने पर सदस्यों के लिए विशेष योजना ३०.१२.२०१३ तक वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पुणे महाराष्ट्र की कृति 'नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता की प्रति मुफ्त प्रेषित की जाएगी. इस योजना का लाभ उठाने की शीघ्र अपना सदस्यता फार्म भर कर भेजें

विश्व स्नेह समाज का अब सदस्यता शुल्क देना बिल्कुल आसान

१. अपने आसपास ही विजया बैंक की किसी शाखा में जाए, खाता संख्या 718200300000104 में अपनी सदस्यता राशि जमा करें,
२. एक पोस्टकार्ड पर जमा की तारीख लिखकर भेज दें यां vsnehsamaj@rediffmail.com पर ईमेल करें.

समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति सम्मान

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष स्व० पवहारी शरण द्विवेदी की स्मृति में इस वर्ष से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान करने वाले समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान प्रदान किया जाएगा. इस सम्मान में **पाँच हजार एक रुपये नगद,** स्मृति पत्र प्रदान किए जाएँगे. प्रतिभागियों को अपने समाज सेवा का प्रामाणिक विवरण कार्यालय के पते पर 30 सितम्बर 2013 तक.

एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-211011, उ.प्र.

शराफत अली

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

मेरे एक पड़ोसी थे, शराफत अली. बेचारे शादी-शुदा है. उनकी बीवी भी यही रहती है. बेचारे एक दिन मेरे पास आये, और बोले, अलबेला भाई, क्या बताऊँ आपको, बताने में भी शर्म आती है. मैंने सोचा हो सकता हो उधार पैसे मांगे या कहीं अपने को काम पर रखवाने की बात करें. मगर उल्टा हुआ. उन्होंने कहा-'अलबेला भाई! मैं शादी करके परेशान हूॅ.' मैंने कहा-'क्यों, क्या हुआ भाई साहब! शर्माइए नहीं, हम तो आपके अपने ही है.' उन्होंने कहा-'क्या बताऊँ, आज से दस साल पहले जब मैं छात्र था तो शादी की बात चली, मैं बहुत ही खुश हुआ कि चलो अब आराम मिलेगा. चार हाथ, चार पैर, दो दिमाग, यानी दो जिस्म और एक जान हो जाएंगें. जहॉ भी समस्या आएगी बीवी से सलाह लूंगा, कपड़े धुले हुए मिलेंगे, खाना बनाने से छुट्टी मिलेगी. लेकिन मेरी किस्मत फूटी थी जो शादी कर लिया. कितना खुशहाल, मस्त था मैं. लेकिन आज अगर सबेरे समय से नहीं उठा तो कम से कम दो बेलन तो पड़ने ही है.

शराफत अली की बातें सुनकर मैं बोला-'बेलन! छिः छिः.... उन्होंने बात आगे बढ़ाते हुए कहा-'क्या बताऊँ अलबेला भाई, मैं उस दिन को कोसता हॅू, जिस दिन मैंने शादी के लिए हामी भरी थी. उस समय कितना उमंग भरा उत्साह था. मन में शादी, एक अजनबी दोस्त से जीवन भर साथ निभाने की कसमें, क्या हॅसीन सपने देखे थे मैंने, सबके सब चकनाचूर हो गये. शराफत अली की बातें सुन मुझे बहुत ही दुःख हुआ. उन्होंने आगे कहा-'अभी शादी के मात्र चार दिन ही बीते थे कि एक दिन हमारी श्रीमती जी ने मुझसे कहा-'आप कब अपनी ड्यूटी पर जायेंगें?' मैंने कहा-'बस दो दिन और छुट्टी बची है.' उसने मुझसे कहा-'मैं भी साथ चलूंगी.' मैंने कहा-'अभी कहॉ जाओगी? अभी यही रहो, अब्बू-अम्मी की सेवा करो. आखिर उन्हें भी तो अपनी बहू से बहुत-सी आशाएं होगी. मैं प्रत्येक रविवार को आ जाया करूंगा.' मै उसे समझाता रहा, मनाता रहा, सारे जतन कर डाले, मगर वह जिद्द पकड़ ली. वह कहने लगी-'यहॉ कौन सास-ससुर, ननद देवर के नखड़े उठाएगा. कौन इतने लोगों का खाना पकाएगा. आपके पास रहॅूगी तो केवल दो लोग रहेंगे, चार रोटी पकाएंगे बस काम समाप्त और दिन भर आराम रहेगा. यहॉ न तो फिल्म देखने को मिलेगी, न घूमने को, बस सारा दिन इसी मकान के अंदर सड़ते रहो.' मैंने उसे बहुत समझाया, समझाते-समझाते थक गया. लेकिन उसकी सेहत पर कोई असर नहीं पड़ा. उल्टे उसकी जिद्द बढ़ती ही गयी. मैंने उससे कहा भी कि किस मॅुह से अब्बू-अम्मी से कहॅू तुम्हें साथ ले जाने के लिए. अंततः यह मिया-बीवी का मुद्दा बिना कहे अम्मी-अब्बू व घरवालों के कान तक पहॅुच गया. मैं कही का नहीं रहा. कुछ रिश्तेदारों आदि ने समझाया, मगर उसकी जिद्द के आगे किसी की न चली. अंततः सबको हारकर मेरे साथ उसे भेजना पड़ा. मेरी हालत सॉप-छछूंदर के जैसे हो गयी. बीबी पहले से ही नाराज थी और अब घरवाले भी अप्रत्यक्ष रूप से नाराज हो गये. मैं घरवालों को भी अपनी बात समझाने की बहुत कोशिश की, मगर सब कहते कि बिना तुम्हारे कहें उसकी कैसे हिम्मत पड़ेगी, वह तो अभी नयी नवेली दुल्हन है. अम्मी को चिन्ता थी कि पुनः खाना बनाना पड़ेगा, बहनों की चिन्ता कुछ काम हल्का हो गया था, छोटे भाइयों को चिन्ता भाभी से हंसी-ठिठोली करने का, अब्बू को चिन्ता बहू से घर मे रौनक रहेगी. मैं अपनी हालत किससे बताता-

किससे कहॅू दर्द अपना,
हर कोई बहरा यहॉ।
बंधु सब अपने फिकर में,
स्वार्थ का पहरा यहॉ।।

सब लोग अपना-अपना स्वार्थ देख रहे थे. मैं निःस्वार्थ बीच में मारा जा रहा था. अब्बू और अम्मी ने मेरी रजामन्दी जानकर बहू को भेजने को तैयार हो गये. खैर, मरता क्या न करता. मुझे बीवी को साथ लेकर आना पड़ा. वहॉ अड़ोसी, पड़ोसी, दोस्त-यार, सबको मेरी बीवी का आना जानकर कमरे पर सुबह से शाम तक तांता लगा रहता. मुझे आगन्तुकों के सामने बहुत ही शर्म होती, क्योंकि मेरी बीवी मुझसे इस बात से नाराज थी मैंने अपने अम्मी-अब्बू से उसे साथ लाने के लिए क्यों नहीं कहें. मगर दोस्तों के सामने तो मुझे तो न चाहते हुए भी बात करनी ही पड़ती. क्या बताऊॅ अपना हाल. मुझे समाज के डर से झुकना पड़ा. उसने कहा-'मुझसे माफी मॉगिए और वादा कीजिए कि आइन्दा अगर मैं कुछ कहॅूगी तो उसे आप अवश्य करेंगें.'

एक तरफ कुऑ, एक तरफ खाई,
अब क्या करूं, मेरे भाई।

हारकर समाज को अपने बोलचाल बंद होने की बात से अनभिज्ञ रखने के लिए अपनी बीबी से कहना पड़ा-'हे प्रियतमा! हे कलयुगी देवी! हे सर्वेसरान! हे महाकाली! महाचंडी, हे पति प्रताड़न! अपने इस दास को, इसकी गलती को माफ करें और इज्जत को बक्श दें. मैं ऐसी गलती कम से कम अपनी इज़्ज़त के खातिर तो नहीं ही करूंगा.

यह दिन मेरी शादी शुदा जिंदगी का सबसे बुरा दिन था क्योंकि इसके बाद तो मेरी बीबी ने जैसे मुझे गुलाम ही बना लिया. अगर कोई कार्य कहती और मैं न करता, तो तुरंत गुर्रा जाती और कहती-'याद है, जानते हो, सभी के सामने.....' मैं कहता-बस बस. उसकी फरमाइशों के कारण मुझे रिश्वत खोरी चालू करनी पड़ी. जिससे मेरी नौकरी भी चली गई और आज मैं बेकार हूँ, बेरोजगार हूँ. आज मुझे चाय, खाना, बर्तन, झाड़ू, पोछा सब करना पड़ता है. जब वह मैके जाती है तो मुझे बहुत ही सुकून मिलता है. क्या बताऊं, अब मेरा दिल उसके साथ एक पल रहने को भी नहीं करता, सामाजिक बंधनो के कारण छोड़ सकता नहीं, अलबेला भाई तुम ही कुछ उपाय बताओ. मैने कहा-'शरीफो का इस जमाने में, अजी ए हाल ओ देखा, कि शराफत छोड़ दी मैंने. आपकी शराफत ने आपको ले डूबा. खैर! एक उपाय बताऊँ. जिसका अगर पालन करें तो कुछ मामला हल हो सकता है. ' इतना सुनते ही शराफत भाई के चेहरे पर खुशी की लालिमा झलक उठी. उन्होंने कहा 'हॉ-हॉ, बोलो-बोलो, अलबेला भाई, मैं इस देवी से छुटकारा पाने के लिए मरने को भी तैयार हूँ.' मैंने अपनी सारी योजना उन्हें बता दी. आपको कुछ नहीं करना है, बस मेरे कहे अनुसार रहिएगा. वे बहुत खुश हुए.

रविवार का दिन था मैं उनके कमरे पर गया और बाहर से आवाज दिया-'भाभी जान, भाभी जान, शराफत भाई कहा है? वे मेरी आवाज सुन बाहर आयी. यद्यपि मैं उनसे बहुत ज्यादा बात नहीं करता था, लेकिन मेरी मुहल्ले में व्यक्तिगत प्रतिष्ठा के कारण मेरी बहुत इज्जत करती थी. वे कमरे से बाहर आयी-'अरे अलबेला भाई, आप, आइए, आइए.' तभी उनकी नजर बगल में खड़ी लड़की पर पड़ी. और उस लड़की के सामने ही पूछ ही बैठी-'अरे यह सुशील, सुन्दर लड़की कौन है.' मैंने कहा-'आप इन्हें नहीं जानती, ये शराफत भाई की दोस्त है, मिस नीलू, उनकी क्लास फेलो है, बड़ा ही गहरा रिश्ता है इनका शराफत भाई से, कॉलेज के दिनों से. आपको नहीं मालूम क्या?' भाभीजी बड़बड़ाई उनकी दोस्त और एक लड़की. आने दें इन्हें, अच्छी खबर लूंगी. अरे! भाभीजी आपके पति की गहरी दोस्त है, आप इन्हें बैठाइए, कुछ चाय शाय हो जाए. भाई साहब से बाद में निपटिएगा, अभी तो ये आपकी मेहमान है अतिथि देवो भवः हमारी भारतीय संस्कृति कहती है. वैसे इनकी दोस्ती का गलत अर्थ मत निकालिए, ये सभ्य लड़की है, वो अलग बात है कि आपके पति की कॉलेज के दिनो की दोस्त है. खैर बड़ी मुश्किल से चाय-नाश्ता करवाया. जितने देर तक हम दोनों रहे, सीधे मुँह बात तक नहीं की. थोड़ी देर में नीलू ने अब चला जाए कहा. और भाभी जी को नमस्ते किया. वे उसके नमस्ते का जबाब तक नही दी. मैं नीलू को छोड़ने चला गया ओर उससे बोला-नीलू जी आपका बहुत-बहुत धन्यबाद. एक बार और आकर इस घर की मेहमानबाजी कर जाइएगा. 'अरे अलबेला जी, यह तो मेरा घर है, मैं तो अब कभी कभार आ जाया करुंगी, आखिर मेरा भी कुछ हक है शराफत पर.

अभी नीलू को गये हुए दस मिनट भी नही हुए होगें कि भाभी जी मेरे कमरे पर आ गयी. मैं खाना बनाने जा रहा था. खैर! मैंने बोला, 'अरे भाभी जी आप, आपने क्यों कष्ट किया. आप किसी से मुझे बुलवा लेती.'

'आप खाना मत बनाइए. आपका खाना मैं बना दूंगी, आप मेरे घर आकर खा लीजिएगा. अरे भाभी जी आप तो जानती ही होगी कि मैं....,

'मैं जानती हूँ कि आप शाकाहारी है, मैं आपके हिसाब से ही खाना बनाऊंगी, उसकी चिन्ता मत करिए. मैं आपका धर्म नष्ट करूंगी.'

'ठीक है, भाभी जी, कभी-कभार ही तो चौके बेलन से फुरसत मिलती है, इसलिए मैं ऐसे मौके नहीं छोड़ता'

'अलबेला भाई, आप तो जानते है कि एक औरत के लिए सौतन से बड़ा अभिशाप और कोई नहीं हो सकता. इतने सीधे-साधे थे, ये कैसे बदल गये. मेरे अलावा किसी औरत की तरफ ऑख उठाकर भी देखते हुए मैंने आज तक नहीं देखा. मेरी बहने व सहेलियां भी कहती है-'जीजू तो लगते है मर्द है ही नही, औरतो की हम लोगों को देखकर शर्मा जाते है. फिर ये कैसे? आज तक हर बात मुझसे बताते रहे है, लेकिन इस चूड़ैल के बारे मे कभी उन्होंने नही बताया. यह तो डायन है, उसने मेरे घर में

आग लगायी हे, आखिर उसे अब क्या मिलेगा, मेरा घर बर्बाद करके.' वह इतना कह कर रोने लगी.

मैंने कहा-'भाभी जी रोइए मत. न तो इसमें भईया की गलती है और न इस लड़की की. यह तो बस समय का फेर है. मैने तो आपके हित के लिए, आपको सचेत करने के लिए शराफत भाई के घर पर न होने की बात जानते हुए भी बहाने से इसे लाया था. लेकिन एक बात बताइए, आप शराफत भाई को परेशान तो नहीं करती. मैं तो उन्हें बहुत दिनों से जानता हूँ बहुत ही रहम दिल व चरित्र के धनी व्यक्ति है.

"मैं भला उन्हें क्यों परेशान करूंगी. आपही कोई उपाय बताइए, कैसे इस चंडाल लड़की से छूटकारा मिले."

"भाभी जी बुरा मत मानिएगा, वह लड़की है, और आज कल की लड़कियॉ, और औरते बेढंग के कपड़े पहनकर, उम्र का ध्यान न रखकर अत्याधुनिक दिखाने के लिए सौन्दर्य प्रसाधनों का अत्याधिक प्रयोग करके, पुरुषों को आर्कषित करने का भरपूर प्रयास करती है. वे चाहती है कि सड़क पर वे जब चले, तो लड़के/पुरुष उन्हें देखें. और पुरुष जाति की यह कमजोरी होती है कि वह सुन्दर नारी को देखकर फिसल जाता है. विश्वामित्र जैसे महान तपस्वी भी मेनका के मोहजाल में फंस गये थे, शराफत भाई तो आम इंसान है. लेकिन, अगर आप मेरा कहा माने तो भाई जान आपके पुनः हो सकते है. वरना सोच लीजिए कहीं उस लड़की से भाई साहब ने शादी कर ली तो आपका क्या होगा? आपके यहां तो व्यवहारिक रुप से चार शादी करने का प्रावधान बन गया है. पूरा पैसा, समय उसको देंगें और आपके साथ आपकी सौतन एक ही घर में रहेंगें, आप तो बस..... सब लोग आपको ही भला बुरा कहेंगे."

इतना सुनते ही भाभीजान बोली-"क्या करूं, अलबेला भाई, आप जो कहेंगें मैं करने को तैयार हूँ."

"आप, शराफत भाई का ख्याल रक्खें, उनसे अनावश्यक खर्चे के लिए बाध्य न करें, उनसे प्यार से बातें करें, उनको समय दें, थोड़ा मस्का लगाइए, उनके चाय-पानी, भोजन, कपड़े आदि का समय-समय से ध्यान रक्खें. अगर कभी खाना या चाय बनाने भी जाए तो आप मना करें, उन्हें अपना पूरा ध्यान अपनी नौकरी को पुनः पाने में लगाने को कहें, कुछ आय के स्रोत बढ़ाने को सोचने को कहें, यथा सम्भव उनको अपनी सलाह भी दें."

"ठीक है, अलबेला भाई, मैं आज से ही अपने आपको, आपके कहें अनुसार बदल लूंगी."

धीरे-धीरे भाभीजान अपने आपको, बदल ली थी. अब शराफत भाई को कोई काम करने नहीं देती. सारा काम खुद करती.'

करीब तीन हफ्ते बाद, शराफत भाई उस लड़की के कंधो पर हाथ रक्खें हुए कमरे पर पहुँचें और बोले-"बैठो, नीलू डार्लिग!"

"ओह! शराफत, तुम मुझे कितना प्यार करते हो, इतना प्यार तो कोई अपनी बीबी को भी नहीं करेगा." नीलू शराफत भाई के गले में अपनी बॉहों का हार पहनाते हुए बोली. यह सब देखकर भाभीजान का सब्र टूटने लगा है और नीलू के पास आकर कही-"तुम क्यों मेरे भरे-पूरे परिवार को बर्बाद को करने पर तुली हुई हो. नीलू बहन, मैं तुम्हारे पांव पड़ती हूँ, तुम इन्हें बक्श दो, मैं तुम्हारी जीवन भर एहसानमंद रहूँगी." शराफत भाई की ओर मुखातिब होकर बोली-"मैं, अब आपको कभी परेशान नहीं करुंगी, अगर आज के बाद कभी मेरे प्यार में कमी पाइएगा, कोई काम आपसे करवाउंगी तो कहिएगा." वह उनके पैर पकड़कर रोने लगी.

शराफत भाई, अपनी पत्नी को गले से लगा लिए. ऐसा लग रहा था, दो बिछुड़े हुए प्रेमी वर्षो बाद एक दूसरे से मिल रहे हो. तब तक मैं भी वहीं पहुँच गया. सब लोग ठहाका लगाकर हँस पड़े. मैंने कहा-"भाभीजान, यह तो आपको बदलने के लिए एक योजना थी. अगर सचमुच में ऐसा होता, तो कितना बुरा होता. इतनी जल्दी आप इससे छुटकारा नहीं पाती."

"अलबेला भाई, आपने समय रहते मेरी ऑखें खोल दी. वरना मैं कहीं की न रहती. आपकी मैं एहसान मंद हूँ. " शराफत भाई भी मेरे पास आकर बोले- "अलबेला भाई, आपने तो मेरी बीवी को आग के शोले से, बर्फ का टुकड़ा बना दिया. शायद यह कोई न कर पाता.

निकालकर ग़म के अंधेरों से
तुमने हमें रोशनी दी।
सुन शमा ये परवाना तुम्हें
जिंदगी भर न भूलेगा."

और इधर मैं बूरी तरह फंस गया. क्योंकि नीलू जिसे मैंने महज एक नाटक के किरदार के लिए लाया था वह मेरे गले की हड्डी बन गयी. वह कहने लगी आप दूसरों के लिए इतना कर सकते हैं. आपसे शादी करके मैं बहुत खुश रहूंगी.

बेटी होती है क्या धूल?

ममते! मुझको भी आने दो।
तेरी गोदी में मेरा स्वर्ग,
तेरे चुम्बन में मेरा सर्वस्व
ममते! मुझको भी मिलने दो।
कितनी कलियों को देख
विहंसता है तेरा सर्वांग
'किट्टी' के बच्चों को
मिलता सहस्त्र चुम्बन
फिर मुझसे ही क्यों इतनी नफरत
ममते! मुझको भी प्यार मिले।
दौड़-दौड़ मांगा था तुमने
अपने आंचल में फूल
बेटा होता है फूल तो
क्या बेटी होती है धूल?
ममते, यह तेरी नहीं भूल
मुझे न्याय मिले।
मै हूं कैसी तुम देखो तो,
मेरे नन्हें हाथों को चूमों तो,
हर्षित हो कहो 'मेरी बिटिया है'
दुख दर्द भूल जाओगी,
मुझको गले लगाओगी।
करबद्ध प्रार्थना है तुझसे,
मुझको भी पृथ्वी पर आने दो।

-**डॉ० कल्याणी सिंह**
पटना, बिहार

गीतिका

आप न मिलते तो अच्छा था
साथ न चलते तो अच्छा था
अब तो हर दुख सह लेते हैं
सुख न मिलते तो अच्छा था
पांव न छिलते तो अच्छा था
डस लेने देते नागों को
पग न मिलते तो अच्छा था
घाव हमारे निशिदिन खिलते
पुष्प न खिलते तो अच्छा था
भूखे रह उत्पात मचाते
पेट न पलते तो अच्छा था
कष्टों से नाता जन्मों का
कष्ट न मिलते तो अच्छा था।

-**रमेश चन्द्र शर्मा 'चन्द्र'**
अहमदाबाद, गुजरात

औरत

दुनिया का हर छल
सह सकती है
औरत,
क्योंकि वो बनी ही है
उसके लिए।
पर कितना दर्दनाक, भयानक,
असहनीय होता है,
बेटे का मां से किसी भी
बात पर ज़रा सा दूर होना
रूठ जाना।
नहीं दिखते वो अविरल आंसू
तड़पती रूह, क्योंकि बेटा
अंश होता है उसकी आत्मा
व शरीर का।

तुम्हारी याद

जीवन में सारे कमरे
खिड़कियां बन्द करके
भी, बन्द नहीं होती
मेरी ज़िन्दगी।
छोटे-छोटे झरोंखों से
झांकती है तुम्हारी याद
रूलाती है मुझे,
पर इस याद को कौन
सा नाम दूं।
तुम्हें महसूस करती हूं
अपने खून में,
खून ठंडा भी तो नहीं
हो सकता।
शायद समझ नहीं सकते
जन्म देना ही मातृत्व को
जन्म नहीं देता,
कई अनकहे रिश्ते भी
हिला जाते हैं सम्पूर्ण
अस्तित्व।

-**शबनम शर्मा,**
सिरमौर, हि.प्र.

अधूरापन

मानवता को ढूढता फिरता
गली-गली हर शाम
कहीं पर हो ना वो परेशान
उसकी मदद करो हे राम-उसकी-1
अपनी वेदना जिसको सुनाता
वे पहले से हैरान
लगता है वह रूठ गई है
या हो गई बहुत सयान-उसकी-2
जन सैलाब कुम्भ में देखा
जहां धर्मराज की शान
वहां भी मानव दानव बन कर
ली तेरह की जान-उसकी-3
दिल्ली की दर्दनाक घटना
सुनकर रोयां रोयां रोयां
वहां चीख रही थी मानवता
पर न्याय कहे नादान-उसकी-4
भय का भवर है अपनों में
नर भक्षी का कोई खौफ नहीं
हैवान बना इंसान यहां
शैतान हुआ बदनाम -उसकी-5
भारत की दशा ऐशी होगी
सोचा होगा न शहिदों ने
खूनों से सीचा था जिसको
क्या वही ये हिन्दुस्तान -उसकी-6

-**राम केवल**
सी.ए.टी.सी.इलाहाबाद

जवानी में साहस, उत्साह, आकांक्षा, परिश्रम तथा लगन का जोश रहता है. प्रत्येक कार्य करने की सामर्थ्य तथा नवीन आशाए होती हैं. -**दाऊजी**

असरार नसीमी

जाने क्यों जाने पहचाने मुझसे कतराते है लोग
जाने क्यों अन्जाने अकसर अपने बन जाते है लोग
वक्त से पहले आ नहीं सकती मौत किसी भी सूरत में
शहर में कातिल के रहने से फिर क्यों घबराते है लोग
अपने ग़म का बोझ उठाये शहरो शहरों घूमा हूं
देखना यह था किसके ग़म में कैसे काम आते हैं लोग
कौन किसी के ग़म खाता है कौन किसी के काम आता
अपने अपने ग़म में सारे आंसू बरसाते हैं लोग
ज़ात पात और बुग्जो नफरत कोई नहीं आता है आड़े
ग़ैर वतन में अपने वतन के जब भी मिल जाते हैं लोग
कलयुग इसका नाम है यारों इसमें वफ़ा का नाम न लो
आज वफ़ा पर मिटने वाले पागल कहलाते हैं लोग
दुनिया के इन लोगों में कुछ लोग भी ऐसे हैं असरार
जो लोगों के ग़म नहीं खाते उनके ग़म खाते हैं लोग।

—बरेली, उ.प्र., मो०: 9412360761

बुरी आदतें

कैसे ये ईमान बचाएँ बुरी आदते छूट न पातीं।
पूरी मेम बन गई बीवी,
ये रह गये अधूरे साहब,
आती इधर हाथ में दौलत
जाने कहां समा जाती सब,
देख देख दुनिया का वैभव बहती आँखें फूट न पातीं।
इन्हें चाहिए कार निराली
नूतन वस्त्र नये आभूषण
नित्य नये आमोद प्रमोदों
में कटता रहता हो प्रति क्षण
सोने के सपनों की लड़ियाँ पलकों से हैं टूट न पातीं।
ऊंचा इनका रहन सहन है
ऊँचा ही है खाना पीना
ऊँची ही रहती है नज़रें
ऊँचा ही रहता है सीना,
ऊँची अगर न होती बातें है, सूट ये बूट न पातीं।
घूस मरण है कहती दुनिया
किन्तु यही है इनका जीवन,
इसी तत्व पर टिका हुआ है
काले बाजारों का यौवन,
घूस बिना कितनी रसनाएं जीवन का रस लूट न पाती।

—डॉ० गार्गीशरण मिश्र 'मराल'
जबलपुर, म.प्र.

गीतिका

हमने अपने ही हाथों से सन्देहों की भीत खड़ी थी,
मन के कोमल सम्वेदन से अवसादों की जीत बड़ी थी।
सदा अकेला रहा जूझता भीड़ भरे कोलाहर में भी
मिलन की घड़ियों की जिज्ञासा निर्वसना भयभीत खड़ी थी।
मंगल बेला जब भी आई निकल गई बस से होकर
असमंजस की विषम परिस्थिति अपने ही विपरीत खड़ी थी।
तोड़ के बन्धन जब भी चाहा दरवाजों के पार निकलना
सारे आंगन की अंगनाई सिसकी ले भयभीत जड़ी थी।
सद्भावन मनभावन पथ पर निश्चय के घटकों की दस्तक,
जब भी हमको पड़ी सुनाई शंका सम्मुख ढीट खड़ी थी।
धुन्ध भरे को हरों की चादर समय सुहावन के ऊपर से
जब भी चाहा खींच उतारें ऋतु बसन्त बन पीत खड़ी थी।
सूख गए आंसू के क़तरे मौन हो गई स्वर की सरगम में
कसती गई खूटिया जड़ जो अनहोनी यह रीत बड़ी थी।
अन्तरतम तक जो छू जाए बातें कर जो मन भा जाए,
उत्पीड़न मानव के मन में दुविधाओं की शीत बड़ी थी।

—पी.एस.भारती
बरेली, उ.प्र.

गीतिका

सुरमई शाम की रंगत में निखारी आंखो,
कितनी प्यारी नजर आती हैं तुम्हारी आंखो।
लाज-ओ-शर्म का पहरा अभी है चितवन पर,
मुझको लगता है कि अब तक हैं कुंआरी आंखें।
चीर कर दिल को बनाती हैं ये राहें-मंजिल;
कितनी बेदर्द हैं बेपीर दुधारी आंखो।
दांव पर दिल को लगा देती हैं यूं हंस-हंस कर,
पेशेवर जैसे कोई हो ये जुआंरी आंखो।
राज-ए-दिल का खुलासा भी पल में कर देती,
कितनी बेज़ब्त है, बेसब्र उधारी आंखों।

—बृज बिहारी 'बृजेश'
मोहम्मदी खीरी, उ.प्र.

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

01-**कैलाश गौतम सम्मान**-(हास्य/व्यंग्य रचना), 02-**डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना), 03–**हिंदी सेवी सम्मान**- (विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक-किसी भी विधा की रचना), 04-**राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). 05-**राष्ट्रभाषा सम्मान**-(अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए) 06-**कला/संस्कृति सम्मान**-(संगीत, नाटक, पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), 07-**बाल साहित्यकार सम्मान**-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना, 08- **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) 09-**राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान, प्रमाणिक विवरण), 10-**पुलिस हिंदी सेवा सम्मान**-(पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए), 11-**सांस्कृतिक विरासत सम्मान**-(भारतीय/स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण) 12-**प्रवासी भारतीय सम्मान** (प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हों.) 13-**युवा कहानीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम) 14-काव्यश्री 15-कहानीश्री, 16-ग़ज़लश्री, 17-दोहाश्री, 18-**विधि श्री** (विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए), 19-**डॉक्टरश्री** (डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए)20-**शिक्षकश्री** (शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए)21-**सैनिक श्री** (सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी सेवा के लिए),22-**विज्ञान श्री** (विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है) 23-**प्रशासक सम्मान/प्रशासकश्री** (कुशल प्रशासन अथवा किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा देने के लिए) 24-**विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित 100 पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र में**: साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री **समाज के क्षेत्र में**: समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाजश्री, **पत्रकारिता के क्षेत्र में**: पत्रकार शिरोमणि, पत्रकार रत्न, पत्रकारश्री

विशेष:१. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/ बैंक ड्राफ्ट/ मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी. जो जनवरी 2014 से लागू होगी. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी.

३. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा. किताबों पर हस्ताक्षर न करे। सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा और न अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार किया जाएगा. प्रविष्टि भेजने के पूर्व मांगी वांछित सामग्री को सुनिश्चत करलें

४. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. किसी प्रकार

के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वद्जनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१३

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-९३, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.
मो०: ०९३३५१५५९४९, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतु प्रविष्टि संदर्भः

महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले...सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा आत्म विवरण निम्नवत हैः-

नामः ....पिता/पति का नामः...

पताः..

....

दू०/मो०संख्या.........................ईमेल-..........................

रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः...विधा...................वर्ष........................

प्रेषित प्रतियाँ............. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि.....................बैंक का नाम..........................

संख्या.......................

मैं शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मुझे स्वीकार्य है.

प्रस्तावक

नाम.............................
हस्ताक्षर..........................
पूरा पता......................

भवदीय/भवदीया
हस्ताक्षर...................................
पूरा नाम...................................

सलंग्नक

०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

‘अपनी कलम’ हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

काव्य खंड के लिए के लिए 10 गीत/10ग़ज़ल/10 नई कविताएं/100दोहे **गद्य खण्ड** के लिए 5 लेख/5 संस्मरण **कहानी खंड** के लिए 5 कहानियां/10 लघु कथाएं

प्रत्येक खण्ड के लिए प्रत्येक रचनाकार को 15 पृष्ठ दिए जाएंगे. सहयोगी आधार पर प्रकाशित होने वाले इस संकलन के लिए रचना के साथ, सचित्र जीवन परिचय, व 1500/रुपये 30 सितम्बर 2013 तक अपेक्षित है. (अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता संः०एस.बी. 538702010009259 में अथवा धनादेश/डी.डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं.) अपनी रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करेंः

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद—211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

जीवन के उस पार

भगवावेष वेष स्वयं परमात्मा का है. इसे धारण करना परमात्मा का अपमान है. प्रत्येक मृत आत्मा को एक लोक से दूसरे लोक में जाने के लिए 3 वर्ष 9 माह और 9 दिन लगते हैं. प्रत्येक मनुष्य की आयु एक हजार एक सौ एक वर्ष निर्धारित है. लगभग 100 वर्ष तक, वह मनुष्य देह में रहता है. तत्पश्चात उसे कर्मानुसार सुक्ष्म देह धारी आत्मा के रूप में व्यतीत करना पड़ता है.

डॉ०अरुण कुमार आनंद
चन्दौसी, भीमनगर, उ.प्र.

भाग-02

मनुष्य को धर्म अध्यात्म और भगवावेषधारी संतो को इस आंडम्बर से बचना चाहिए. भगवावेष या पीताम्बर वेष स्वयं परमात्मा का है. इसे धारण कर अकर्म में शामिल होना स्वयं परमात्मा का अपमान है. ब्रम्हाण्ड लोक की यात्रा पूर्ण करने में प्रत्येक मृत आत्मा को 3 वर्ष 9 माह और 9 दिन लगते हैं. तत्पश्चात ही उन्हें कर्मानुसार अन्य लोकों में प्रवेश प्राप्त होता है. अन्यथा वे अवधी पूर्ण होने तक ब्रम्हाण्ड में ही भटकते रहते हैं या भूत-पिचास, जिन्न चाण्डाल की योनि लेकर मृत्युलोक में वापस आ जाते हैं.

हमें सतगुरूदेव द्वारा ब्रम्हगुफा में साधना हेतु भेजे जानें और सिद्धि प्राप्ति के बाद साक्षात जगत पति परब्रम्ह परमेश्वर के साक्षात्कार के बाद यह दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ कि प्रत्येक मनुष्य की आयु एक हजार एक सौ एक वर्ष निर्धारित है. लगभग 100 वर्ष तक, वह मनुष्य देह में रहता है. यह अवधी उसके कर्म करने, योनि परिवर्तन का उपाय करने का है. तत्पश्चात उसे कर्मानुसार सुक्ष्म देह धारी आत्मा के रूप में व्यतीत करना पड़ता है. आयू पूर्ण होने के बाद ही उसे मृत्युलोक में किसी जीव प्राणी के रूप में पुनः जन्म प्राप्त होता है. जहां से कोई भी मनुष्य जीवित नहीं लौटा है. यमलोक पर यमराज का दरबार लगा है. यहां पर कोई कुर्सी टेबल आदि की सुविधा नहीं है. यमराज स्वयं थोड़े ऊंचे आसन पर सामने विराजमान है. दरबार खुले वातावरण में है. कोई हाल नहीं है. ऊपर नीला आसमान है. यमराज के दाये-बाये यमलोक के अधिकारी गण बैठे हैं. उनके सामने मोटे-मोटे रजिस्टर रखे हैं. संभवतः उन बही खातों में आने वाली मृत आत्माओं का कर्म का लेखा जोखा है. बांयी तरफ दूर तक मोटे-मोटे जंजीरों में जकड़े मृत आत्माओं की कतार में लिए यमदूत लाईन में खड़े हैं. इन सभी के मनुष्य जन्म में किये गये कर्मो का निर्णय किया जाना है. सभी को बारी आने पर यमराज के अमीन द्वारा क्रम संख्या से पुकारा जाता है. सभा के बीचो बीच एक कटघर है, जहां पर बारी-बारी से सभी को खड़ा किया जाता है. यहां पर सब समान है. कोई अमीर-गरीब ऊंच-नीच जाति/पाति की परम्परा नहीं है. किंतु पुण्य आत्माओं की कतार यमराज के दाहिने ओर है, उन्हें देवदूत कतार में रेशम की डोरी से बांधे खड़े है. इन्हें भी कर्म संख्या से पुकारा जाता है बारी-बारी से एक वर्ग वह है जो पाप और पुण्य के भागीदार है, उनकी कतार ठीक यमराज के सामने बीच में है. इन्हें यमदूत और देवदूत दोने ही घेरे में लिए खड़े है. इन्हीं के बीच एक पंक्ति महिलाओं की दाहिने ओर और एक पंक्ति हिजड़ों की बाई ओर है. इन सब मृतात्माओं के कर्मो का निर्णय यहां होताा है. इनके कर्मानुसार इन्हें यक्षलोक देवलोक और नर्क लोक भेजा जाता है. यहां पर किसी का मृत्युलोक के सांसारिक नाम राशि से पहचान नहीं है. सभी की अलग-अलग क्रम संख्या है. यहीं पर एक पंक्ति पशु-पक्षियों, कीट पतंगों से निकल कर आये हुए आत्माओं की की भी है. इन्हें इनके कर्मानुसार दूसरे योनि में भेजा जाना है.

पुण्य आत्माओं के कतार के साथ ही देवलोक की अफशराओं की कतार भी है जो पुण्य आत्माओं पर सुगन्धित द्रव्य और पुष्पों की वर्षा कर उनके सदकर्मो का गुणगान भी कर रही है. यमलोक से ठीक यमराज के दाहिने दिशा एक विशाल निकासी द्वार है. बायें उत्तर दिशा के द्वार से पापात्माओं को और दक्षिण दिशा से पुण्य आत्माओं को निकाला जाता है.

क्रमशः

आपकी डाक

स्नेही द्विवेदी जी,

पत्रिका का एक अंक एक मित्र के यहां अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ. पत्रिका का इन्डेक्स की तरतीब सुन्दर नहीं लगी. लेख पसन्द आये मगर मार्जिन कम रहने से सुन्दरता खत्म हो गयी है. कारण यह है कि आपने समुन्दर को समाने का प्रयास किया है. छोटे-छोटे लेखों का चयन अच्छा है. आवरण पृष्ठ तो सुरक्षित है परन्तु अन्तिम पृष्ठ के दोनों पृष्ठों पर अगर आप सम्पर्क करें तो मुस्तकिल विज्ञापन मिल सकता है. जिससे पत्रिका को मुस्तकिल आय हो सकती है.

-असरार नसीमी

102, कंघी टोला, किला बरेली, उ.प्र.

आदरणीय महोदय,

पत्रिका का अंक मिला. संपादकीय आलेख और अन्य सभी इस अंक के लेख बहुत प्रशंसनीय है. आपकी पत्रिका के माध्यम से समाज को, विद्वतजनों को गहराई से ज्ञान प्राप्त होता है. ज्ञान की झोली पूर्ण रूप से भर जाती है. संपादक के रूप में आपको हृदय से धन्यवाद करना मेरा कर्तव्य बन जाता है. इस पत्रिका के माध्यम से मुझे नया जीवन मिला है, ऐसा महसूस होने लगता है. आपने मेरा एक आलेख इस अंक में छापा है जिस पर मुझे बर्धा, बंद्रपुर, अमरावती, भंडारा और विदर्भ से कई पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों और लेखकों के पत्र प्राप्त हुए. इसका पूरा श्रेय संपादक होने के नाते आपको जाता है. आपने साहित्य लिखने की जो प्रेरणा दी है, साहित्य के माध्यम से समाज सेवा करने की सुविधा दी है, इसलिए मैं आपका ऋणि हूं.

डॉ० पांडुरंग पराते

747, नया सुभेदार नगर, नागपुर, 440024, महाराष्ट्र

++++++++++++++++++++

परम आदरणीय गोकुलेश्वर जी

सादर प्रणाम!

इलाहाबाद में आपके दर्शन कर बड़ा अच्छा लगा. लभग तीन महीने बाद लखनऊ से पटियाला लौटने पर आपका पत्र मिला. होली के उपलक्ष्य में भेजी गई शुभकामनाओं के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद. **-सुकीर्ति भटनागर**

432, अरबन एस्टेट, फ़ेज-1, पटियाला-147002, पंजाब

दाऊजी की डायरी

बीजेपी का २०१४ का विजनः

कांग्रेस का खात्मा?

आडवाणी युग का अंत.

यानि अब देश में कोई काम करने को बचा ही नहीं बस देश की एक ही समस्या है कांग्रेस.

जैसे आडवाणी और अटल जी ने मिलकर बलराज मधोक, दीनदयाल उपाध्याय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी को किनारे किया वैसे ही मोदी व राजनाथ सिंह ने आडवाणी जी को किनारे करने का पूरा संकल्प लिया है.

आखिर हम कब सुधरेंगे?

सीओ जियाउल हक की शहादत पर 40 लाख व परिवार के दो सदस्यों को नौकरी, सिपाही बाबूलाल की मौत पर 20 लाख और जमीन का पट्टा लेकिन एसओ आर.पी.द्विवेदी की शहादत पर पर फूटी कौड़ी नहीं??????? आखिर कब तक चलती रहेगी ये धर्म और जाति के नाम पर बांटने की राजनीति

प्रयास काव्य संग्रह

रचनाकारः
ओम प्रकाश त्रिपाठी

मूल्यः 50/रुपये मात्र

प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र.-211011 मो०9335155949

क्या है गठिया?

जब हड्डियों के जोड़ो में यूरिक एसिड जमा हो जाता है तो वह गठिया का रूप ले लेता है। यूरिक एसिड कई तरह के आहारों को खाने से बनता है। रोगी के एक या कई जोड़ों में दर्द, अकड़न या सूजन आ जाती है। इस रोग में जोड़ों में गांठें बन जाती हैं और शूल चुभने जैसी पीड़ा होती है, इसलिए इस रोग को गठिया कहते हैं। यह कई तरह का होती है, जैसे-एक्यूट, आस्टियो, रूमेटाइट, गाउट आदि। गठिया के लक्षण गठिया के किसी भी रूप में जोड़ों में सूजन दिखाई देने लगती है। इस सूजन के चलते जोड़ों में दर्द, जकड़न और फुलाव होने लगता है। रोग के बढ़ जाने पर तो चलने-फिरने या हिलने-डुलने में भी परेशानी होने लगती है। इसका प्रभाव प्रायः घुटनों, नितंबों, उंगलियों तथा मेरू की हड्डियों में होता है उसके बाद यह कलाइयों, कोहनियों, कंधों तथा टखनों के जोड़ भी दिखाई पड़ता है। किसको होता है आर्थराइटिस? गठिया महिलाओं से ज्यादा पुरुषों को होता है। यह पुरुषों को 75 की उम्र के बाद होता है। महिलाओं में यह मेनोपाज के बाद होता है। अगर आपके माता-पिता को यह बीमारी है तो आपको भी 20% चांस होगा कि यह बीमारी हो जाए। आर्थराइटिस के जोखिम कारक महिलाओं में एस्ट्रोजन की कमी के कारण, शरीर में आयरन व कैल्सियम की अधिकता, पोषण की कमी, मोटापा, ज्यादा शराब पीना, हाई ब्लड प्रेशर और किडनियों को ठीक प्रकार से काम ना करने की वजह से गठिया होता है।

पहचानः पैरों के अंगूठों में सूजन पैरों में गठिया का असर सबसे पहले देखने को मिलता है। अंगूठे बुरी तरह से सूज जाते हैं और तब तक ठीक नहीं होते जब तक की उनका इलाज ना करवाया जाए। 2. उंगलियों का होता है यह हाल उंगलियों के जोड़ में यूरिक एसिड के क्रिस्टल जमा हो जाते हैं। इससे उंगलियों के जोडो में बहुत दर्द होता है जिसके लिये डाक्टर का उपचार लेना पड़ता है। 3. दर्द से भरी कुहनियां गठिया रोग कुहनियां तथा घुटनों में हो सकता है। इसमें कुहनियां बहुत ही तकलीफ देह हो जाती हैं और सूजन से भर उठती हैं। कैसा हो आहार? संतुलित और सुपाच्य आहार लें। चोकर युक्त आटे की रोटी तथा छिलके वाली मूंग की दाल खाएं। हरी सब्जियों में सहिजन, ककड़ी, लौकी, तोरई, पत्ता गोभी, गाजर, आदि का सेवन करें। दूध और उससे बने पदार्थों का सेवन करें। अगर दर्द ज्यादा बढ़ गया हो तो डाक्टर को दिखा कर दवाइयां खाएं।

पत्रकारों की सुरक्षा, संरक्षा एवं अधिकारों के लिए गठित

मीडिया फोरम ऑफ इंडिया

10 रीवां बिल्डिग, लीडर रोड, (रेलवे जंक्शन के सामने) इलाहाबाद–211003, उ.प्र.
09935959412, 9335155949 **Email:** media_fi@rediffmail.com, **Website**: www.mediaforumofindia.com

मीडिया फोरम का उपरोक्त पता ही एक मात्र कार्यालय है.
सभी पदाधिकारियों के नाम, पते फोटो सहित तथा सदस्यों के नाम वेब साइट में दर्ज है. इसके अतिरिक्त न तो कोई सदस्य ओर न पदाधिकारी विधिमान्य होंगे और न ही इनका फोरम से कोई वास्ता होगा.

सुरेखा शर्मा सम्मानित

हिन्दी भवन, नई दिल्ली में इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती दिल्ली का साहित्य कृति सम्मान 2013 आयोजित किया गया. जिसमें गुड़गाव, हरियाणा की साहित्यकार सुश्री सुरेखा शर्मा की साहित्यिक रचनाओं की प्रशंसा की गई. उनके बाल काव्य संग्रह 'नन्हीं कोंपल', कहानी संग्रह 'रिश्तों का एहसास' तथा बाल एकांकी संग्रह 'आओ पढ़े मनन करें' की सराहना की गई. समारोह की अध्यक्षता सुश्री मीनाक्षी लेखी, राष्ट्रीय प्रवक्ता-भारतीय जनता पार्टी तथा संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. बलवत जानी आदि ने सुश्री सुरेखा शर्मा को प्रतीक चिन्ह, प्रशस्ति पत्र, श्रीफल देकर सम्मानित किया. समारोह में श्रीधर पराडकर, मनोज कुमार शर्मा, डॉ० देवेन्द्र आदि साहित्यकार उपस्थित थे.

लाल कला मंच द्वारा सम्मान समारोह

नई दिल्ली लाल, कला, सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना मंच द्वारा सम्मान समारोह वरिष्ठ समाज सेवी मास्टर डंबर सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ. कार्यक्रम के अतिथि कामरेड जगदीश चंद्र शर्मा, पूर्व निगम पार्षद महेश आवाना, समाजवादी राम पांचाल गौरव बिन्दल थे. कार्यक्रम संयोजक लाल बिहारी लाल तथा संचालन वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. ए.कीर्तिबर्धन ने किया. इस अवसर पर कवियों एवं बच्चों को संस्था द्वारा काव्य सेवी सम्मान राकेश महतो, रवि शंकर, कृपा शंकर, राकेश कन्नौजी, डॉ. सी.एन. शर्मा, हवलदार शास्त्री, ब्रडवासी तिवारी, डेबर सिंह को सम्मानित किया गया. डॉ. आर कान्त, डॉ. के.के. तिवारी को समाजसेवी सम्मान से सम्मानित किया गया.

सुरेखा को शशि सुषमा नारी स्मृति सम्मान

गुड़गाव की साहित्यकार सुरेखा शर्मा को उनके कहानी संग्रह 'रिश्तों का एहसास' के लिये इक्कीस सौ रुपये नगद, प्रतीक चिन्ह, प्रशस्ति पत्र देकर 'शशि सुषमा स्मृति नारी गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया. ये सम्मान उनको वरिष्ठ कवि रामआसरे गोयल ने अपने आवास में अपनी पत्नी शशि सुषमा की चतुर्थ स्मृति बेला पर आयोजित कार्यक्रम 'काव्यांजलि' के अवसर पर प्रदान किया. कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० मधु भारतीय ने की व संचालन डॉ. राकेश अग्रवाल ने किया. समारोह में श्री फूलचंद सुमन, डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी, सुश्री कमल कपूर, आदि ने भाग लिया.

शांति निकेतन में रामआसरे गोयल सम्मानित

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का 65वां त्रिदिवसीय अधिवेशन शांतिनिकेतन, पं.बंगाल में आयोजित किया गया. अधिवेशन का सभापतित्व डॉ. रमेश चन्द्र शाह, डॉ. रशाजीत शाह, डॉ. कृष्ण नारायण प्रसाद मागध ने किया तथा अध्यक्षता सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री विभूति मिश्र ने की. सम्मेलन के निर्धारित विषय 'पूर्वोत्तर की भाषा समस्या और हिन्दी' पर अपना विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार रखें. अधिवेशन के अंतिम दिन रामआसरे गोयल को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया. अधिवेशन में पूरे देश के लगभग पांच सौ से अधिक साहित्यकारों ने भाग लिया.

''हमरे कटे हैं दिन धूप और छांव में,''

इलाहाबाद. अवध साहित्य अकादमी और तारिका विचार मंच प्रयाग के संयुक्त तत्वाधान में एक काव्य गोष्ठी पत्रकार भवन में विवेक सत्यांशु की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई. जिसका संचालन डा० भगवान प्रसाद उपाध्याय ने किया. अपनी सार्थक रचनाओं से कवि गोष्ठी का श्री गणेश जगदम्बा प्रसाद शुक्ल ने इस प्रकार किया-

मर्यादा की रक्षा हित में, सदा निडर रहना सीखो।
भारत में हो यदि जन्म लिए, तो भारत के लिए मरना सीखो।।

कवि चिरकुट इलाहाबादी ने गोष्ठी को नया आयाम दिया-

रो रहा ग्रहक मगर गाने लगी हैं कीमतें।
दिल को इस दुनिया में दहलाने लगीं कीमतें।।

उमेश श्रीवास्तव ने-गगनों में धन गजन लागे।
आया महीना आषाढ़ का सखियां।।

प्रखर कवि विवेक सत्यांशु की रचना इस प्रकार रही-

जिनके नाम ताम्रपत्रों में लिखे जाते थे वे इतिहास के अंधेरे में ढकेल दिए गये।

कवि रामनाथ त्रिपाठी रसिकेश ने गांव का दिग्दर्शन कराया-

हमने काटे है दिन धूप और छांव में, आप भी आके देखो कभी गांव में।।

डा०भगवान प्रसाद उपाध्याय ने कहा-

तन मेरा सुधबुध खो बैठा, मन जब यादों में भरमाया,
काग बोलता है मुंडेर पर पिय पाहुन का खत है आया।।

इनके अतिरिक्त बाबा कल्पनेश, सुधीर सिन्हा, डा० नरेश कुमार गौड़ 'अशोक' ने भी अपनी रचनाएं पढ़ी.

गोष्ठी के मुख्य अतिथि जौनपुर से पधारे डा० सुनील विक्रम सिंह थे.

अन्त में गोष्ठी के समापन से पूर्व कवियों को सम्मानित करके सबके प्रति आभार उमेश चन्द्र श्रीवास्तव ने किया.

सिंदूर

-गणेश प्रसाद महतो
भागलपुर, बिहार

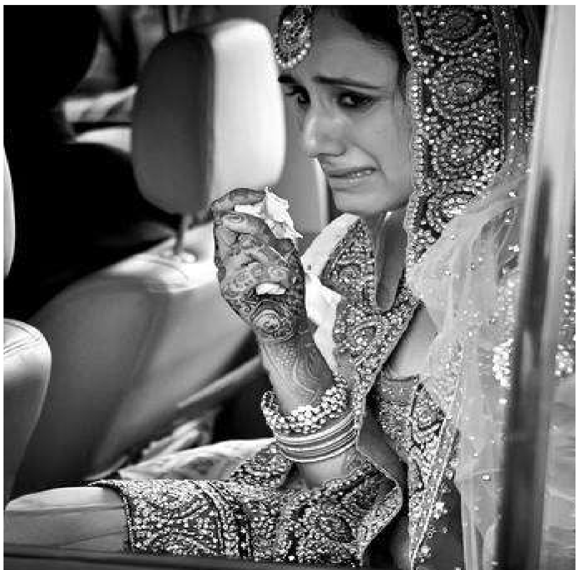

सिंटु जब अपनी बहन शोभा के घर पहुंचा तो शाम के करीब तीन बज गये थे. दरवाजे पर किसी को न देखा उसने पुकारा-''दीदी!''

शोभा घर में ही थी. सो 'दीदी' शब्द सुनकर वह बाहर आ गयी. भाई को देख उसके खुशी का ठिकाना न रहा. झटपट बिछावन बिछा उसके हाथ से झोला लेती हुई बोली-''बैठ सिंटु.'' और, वह तुरत अंदर जा एक लोटा पानी लाकर दी तो वह हाथ-पैर धोने लगा. फिर वह आंगन में चली गयी.

आंगन जा शोभा भाई के लिए कुछ नाश्ता-पानी का जुगाड़ करती. मगर वह उसके लिए क्या सौगात लेकर आया है, यह उत्सुकता उसे पहले झोला टटोलने को बाध्य कर दिया. परंतु हाथ लगा निरीक्षण करने पर मात्र एक डिब्बी सिंदूर के अलावे सिर्फ सिंटु के पहनावे थे जिसे वह स्नान के बाद बदलने हेतु लाया था.

थैले में मात्र सिंदूर देख शोभा एकदम उदास हो गयी. भीतर-ही-भीतर जली-भुनी भी. पहले भी एक बार सिंटु आया था तो मात्र एक डिब्बी सिंदूर ही लेकर. अब नाश्ता के प्रति उसका मन उचट गया. कुछ रुखा-सूखा (जो तत्काल घर में सुलभ था) जलपान के रूप में तथा एक लोटा पानी लेकर उसके पास गयी. वह हाथ-पैर धोकर बिछावन पर बैठा था. उसक आगे वह नाश्ता की टिपली और लोटा का पानी रखती हुई अनमने ढंग से बोली-''ले, नाश्ता कर.''

सिंटु को नाश्ता-पानी दे शोभा चट वहां से खिसक गयी, समाचार तक नहीं पूछी. वहां से सीधे जाकर अपने कमरे में बिछावन पर लेट गयी और मनेमन मायके को कोसने-धिक्कारने लगी.

सिंटु जिस समय आया था, उसका बहनोई काम करने चला गया था. कुछ देर बाद आया तो उसे देख काफी आनंदित हुआ. पास जाकर बैठा तथा समाचार आदान-प्रदान के अलावे भी कुछ देर तक गप-शप करता रहा. इतने समय तक भी शोभा वहां नहीं आयी तो वह अंदर चला गया. देखता है तो वह बिछावन पर जैसे-तैसे लेटी पड़ी है. उसे उसका अपने भाई के प्रति यह व्यवहार बेढंगा लगा. उसका भाई थोड़ी ही देर पहले घर से आया है और वह उसे दरवाजे पर अकेला छोड़ घर में लेटी सोयी है. उसने आवाज दिया तो वह अनसुनी कर गयी.

दुबारा आवाज देने पर वह सिर्फ करवट बदली, हां-हूं, कुछ न बोल केवल उसका टुकुर-टुकुर मुंह ताकती रही. आश्चर्यचकित हो उसने कहा, 'अरे, तुम्हारा भाई आया है. तुम्हे खुश होना चाहिये. मगर तुम उसे दरवाजे पर अकेला छोड़ यहां उदास पड़ी हो. ऐसा क्यों?'

'क्या करूं, मेरा भाग्य ही ऐसा है'

'अभी भाग्य का सवाल कहां से आ गया? भाई आया है. घर आये मेहमान का यथोचित स्वागत करना और उसके साथ प्रेम भाव का प्रदर्शन, यह सब हमलोगों का कर्त्तव्य-धर्म हैं.

'मरे माई-बाप-भाई. मुझे उनसे कोई मतलब नहीं.'

'क्यों मुन्ना की मां! तुम्हारे मुंह से ऐसी बातें? राम...राम. कुछ विशेष बात हो गयी है क्या? आखिर अभी-अभी तुम्हें मायके से इतनी चिढ़ क्यों हो गयी. कुछ मुझे भी तो बताओ.'

शोभा कनमुंहा हो गयी थी. उसकी आंखे डबडबा गयी थीं. कहने लगी-'इसी गांव में मेरी सखी है. उसके भाई-बाप जब भी आते हैं, सबके लिए मिठाई लेकर और उसके लिए खास उपहार भी. और, एक मेरे भाई-बाप हैं जिन्हें एक पुड़िया सिंदूर के अलावे कुछ जुरता-अंटता ही नहीं. जैसे आग लगकर सब जल गया है, कंगाल हो गये हैं.'

'मुन्ना की मां! भाई-बाप को कोसने के पहले अपने पूर्व जन्म की कमाई को कोसो. उसी के कारण तुम गरीब घर

में जनम ली हो और तुम्हारी सखी अमीर घर में. तुम्हारे मायके और तुम्हारी सखी के मायके के आर्थिक स्थिति-परिस्थिति में जमीन-आसमान का अंतर है. प्रत्येक पिता अपनी पुत्री की शादी अपने औकात के आधार पर वैसे ही घर में करता है और आगे भी यथासमय अपनी सकाव के अनुसार सश्रद्धा देते रहता है. मैंने अनुभव किया है, तुम्हारे पिता एकदम गरीब है. अतः अब उनसे कुछ लेने-मिलने की आशा रखना तुम्हारी नासमझी है. वैसे दिन फिरने पर की बात अलग है. अभी उनकी आर्थिक स्थिति एकदम डंवाडोल है.'

'तो यह सिंदूर भी नहीं देते. क्या हम दो रुपये की सिंदूर के लिए भूखे हैं?'

'मुन्ना की मां! तुम औरत होकर भी सिंदूर की कीमत नहीं समझती, इसका मुझे भारी दुख है.'

'हाँ-हाँ, आप ही तो एक होशियार-समझदार हैं और सब कोई बुड़बक.'

'इसमें होशियार-बुड़बक की कोई बात नहीं है. हां, थोड़ा समझने की जरुरत है.'

'क्या समझना है, कैसे समझना है? कुछ समझाइये भी तो.'

'देखो मुन्ना की मां, भाग्य की बात तो तुम समझ ही गयी होगी. देन-लेन में औकात की प्रधानता है, यह भी समझ गयी होगी. अब रही बात समझने की कि तुम्हारे माई-बाप तुम्हें सिंदूर क्यों भेजते हैं. यही न?'

'................'

देखो मुन्ना की मां. वैसे तो अन्न, फल आदि सब कोई खाता है. मगर उसी का प्रसाद बना कर भगवान और देवी-देवताओं को चढ़ाया जाता है तो उसका महत्व बढ़ जाता है. लोग मांगकर भी श्रद्धा-प्रेम से खाते हैं. खाते हैं न?'

''हां, खाते तो हैं. पर इसमें समझने की क्या बात है? यह तो सभी जानते ही हैं कि प्रसाद खाने से देवी-देवता चाहे भगवान उन पर कृपा करते हैं, उनका दुख दूर करते हैं, बढती देते हैं.''

तब तो इतनी बातें समझती ही हो. बड़ी अच्छी बात है. इसी तरह बड़े-बूढ़े किसी को कुछ प्रेम से देते हैं तो उसे उनका आशीर्वाद माना जाता है. और, जैसे देवों की कृपा-आशीवार्द से लोगों का कल्याण-बढ़ती होता है. उसी तरह बड़े-बूढ़े या माता-पिता के आशीर्वाद से भी. बोलो, ठीक कहता हूं या गलत?'

''..................''

''और आगे समझो. एक दिन मैं रामायण पढ़ने वाले से सुना था....'

'क्या सुने थे?'

'राम वनवास की कथा चल रही थी. प्रसंगवश एक जगह सीता ने राम से एक बड़ी सीख भरी बात कही है-

'कौन सी बात?'

'जीव बिनु देह नदी बिनु वारी।
वैसे ही नाथ पुरुष बिनु नारी।।'

'इसका माने क्या हुआ?'

'यही की पति के बिना औरत का जीवन सूखी नदी और जीव के बिना देह के जैसा बेकार हो जाता है. 'दामाद' मरे अभागा के, ऐसा भी कहा जाता है. फिर, पुत्र शोक बर्दाश्त हो जाता है. पर दामाद शोक सदा खलते रहता है.'

'हां, ऐसा तो मैं भी सुनी हूं.'

'इसलिए हर माता-पिता की हार्दिक कामना एवं ईश्वर से प्रार्थना होती है कि उनकी बेटी का सुहाग अजर-अमर रहे. तुम्हारे माता-पिता के सिंदूर भेजने का यही अर्थ है.

पति की ज्ञान भरी अनमोल सीख सुन-समझ शोभा की आंखें भर आयी. उसे महसूस हुआ कि वह कितनी मुर्ख-नादान है जो अपने ऐसे शुभचिंतक माता-पिता को कोसी-धिक्कारी, बुरा-भला कह डाली. उसने पश्चाताप करते हुए ऊपर की ओर देखा और हाथ जोड़ कहा-'हे भगवन्! इस गलती के लिए मैं आपसे माफी मांगुती हूं.'

चिंता मत करो मुन्ना की मां! परमात्मा अज्ञान-अनजान में हुई गलती को अवश्य क्षमा कर देते हैं बशर्ते कि वह दुहरायी न जाय.

सरदार पंछी

आज मुझ पर संगबारी हो गयी,
पत्थरों से रिश्तेदारी हो गयी।
तन्ज़ करके मुझपे वो ऐसी हंसी,
खिल रहे फूलों की क्यारी हो गयी।
एक आंसू टपका मेरी आंख से;
झील मीठी थी जो खारी हो गयी।
उस की अक्खियां मेरी अक्खियों से लड़ी,
खूबसूरत चांदमारी हो गयी।
हिज्रो तन्हाई का अब ख़दशा नहीं,
दर्दो ग़म से अपनी यारी हो गयी।
उसने भेजा इक तबस्सुम हम तलक,
उसकी दौलत अब हमारी हो गयी।
बाग़बां ख़ुश है कि उस के बाग़ में,
अब लहू से आबयारी हो गयी।
अब कहां 'पंछी' ग़ज़ल का रूप वो,
अब तो यह भी दस्तकारी हो गयी।

-लुधियना, पंजाब, मो०:9417091668

संवेदना

'टिकट लेते समय किसी के कराहने की आवाज सुनाई पड़ी. टिकट लेने के बाद मैंने देखा मुसाफिरखानें में एक बूढ़ा कराह रहा था. वह लम्बी-लम्बी सांसे ले रहा था. उसकी हालत नाजुक लग रही थी. मैंने स्टेशन मास्टर को बताया. स्टेशन मास्टर ने रेलवे डाक्टर को फोन से बताया. अस्पताल स्टेशन से मात्र आधा फलांग की दूरी पर थ, लेकिन डाक्टर को आने में एक घंटा लग गया. तब तक बूढ़ा इस दुनिया को छोड़कर जा चुका था.

बूढ़े की मौत ने मुझे झकझोर दिया. अगर मैने डाक्टर का इंतजार न करके बूढ़े को अस्पताल पहुंचा दिया होता, तो शायद उसकी जान बच गई होती.

संवेदनहीनता

'वह बीमार था और दवा लेने अस्पताल जा रहा था. रास्ते में फाटक पड़ता था. ट्रेन आने वाली थी, इसलिए फाटक बंद था. फाटक के दोनों तरफ वाहनों की लम्बी लाईन लगी थी. जो पैदल थे, वे इधर-उधर आ जा रहे थे. वह पहले रुका, फिर आगे बढ़ गया. वह लाईन पार कर पाता उससे पहले ट्रेन आ गई और वह उसकी चपेट में आ गया.

ट्रेन निकलते ही फाटक खुल गया. वह फाटक के बीच पड़ा तड़प रहा था. दोनों तरफ के वाहन उससे बचकर निकल रहे थे. लेकिन किसी के पास उसे अस्पताल पहुंचाने का समय नहीं था.

गेट मैंन की सूचना पर एक घंटे बाद पुलिस आयी, लेकिन तब तक वह इस दुनिया को छोड़कर जा चुका था.

-**किशन लाल शर्मा,** आगरा, उ.प्र.

आरोपी

कल तक वह अपनी जानलेवा केंसर की बीमारी से दुखी था. परिवार में उदासी छा गई थी. दो बच्चे, पत्नी उस पर गरीबी. कोई जमा पूंजी नहीं. न कोई सरकारी नौकरी. क्या करेंगे. बीवी-बच्चे उसके मरने के बाद. दर-दर की ठोकर खायेंगे अभी तो मजदूरी करके जैसे-तैसे परिवार को पाल रहा है. उसके बाद क्या होगा?

उसे अपनी मौत का डर नहीं था. चिन्ता थी अपने परिवार की. क्या उसके बच्चे पढ़ाई बन्द करके किसी होटल में काम करेंगे. उसकी पत्नी दूसरों के घर झाड़ू, पोंछा करेगी या..हे ईश्वर गरीबों को बड़े लोगों की बीमारी क्यों देते हो. कुछ समय अखबार, टीवी, न्यूज चैनल में पढ़ी खबर अचानक उसके दिमाग में गूंज उठी. एक नाबालिग के साथ कुकृत्य और उसकी हत्या पर मंत्री का बेटा संदेह के घेरे में. पुलिस की जांच जारी है. जल्द ही केस सी.बी.आई को सौंपने की विपक्षी पार्टी की मांग.

मंत्रीजी की कुर्सी उनका सम्मान सब खतरे में था. और कोई समय होता तो वह मंत्री के द्वार तक जाने में हिचकिचाता. लेकिन मरते हुए आदमी को किसका भय. वह बेधड़क मंत्री की कोठी में पहुंचा. उसने सौदा किया. परिवार के जीवन भर की व्यवस्था की रकम लेकर अपनी पत्नी के खाते में जमा करवाई. फिर पुलिस और मंत्री की मिली भगत से मय सबूत के उसे गिरफ्तार कर लिया गया. अदालत ने उसे फांसी की सजा सुनाई. उसके चेहरे पर गजब की चमक थी. मानों उसनें मौत को हरा दिया हो.

-**देवेन्द्र कुमार मिश्रा,** छिन्दवाड़ा, म.प्र.

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक के आगामी परिचर्चा का विषय

1—शिक्षा में भ्रष्टाचारः कारण एवं निवारण

2-विचारों के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कहां तक जायज?

3-मंहगाई मूल कारण एवं निवारण

4-भारतीय पुलिस की संवेदनहीनताः कारण एवं निवारण

परिचर्चा हेतु अपने विचार अधिकतम 250 शब्दों में, एक फोटो के साथ क्रम संख्या 01, 02, 03 व 04 के लिए क्रमशः 15 अगस्त, 15 सितम्बर, 15 अक्टूबर, 15 नवम्बर 2013 तक मेल करें या भेजें। मेल हिन्दी क्रुति देव फान्ट में ही भेजें। अच्छे विचारों को उपहार प्रदान किया जाएगा। अपनी सामग्री पत्रिका के पते पर ही भेजें।

मैं ग़ज़ल हूँ

हाल में युवा कवि सूर्य नारायण 'शूर' का ग़ज़ल संग्रह 'मैं ग़ज़ल हूं' प्रकाशित होकर आया है. यह युवा पिछले सात-आठ वर्षों से ग़ज़लें लिख रहा है, और अन्य साहित्यिक गतिविधियों में लगा हुआ है. इस हिसाब से इनका ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित होकर आ जाना जल्दीबाजी कही जाएगी। लेकिन अच्छी बात यह है कि इनकी ग़ज़लों में आमतौर पर वजन-बह्र की कमी नहीं दिखती, ये उर्दू शायरी से बहुत अधिक परिचित नहीं हैं मगर ग़ज़ल के मानदंडों को पूरा करने की कोशिश में जुटे हुए हैं. इनकी ग़ज़लें देखने के बाद सहज ही कहा जा सकता है कि युवाओं में ग़ज़ल के प्रति बहुत अधिक रूझान है और ग़ज़ल सुरक्षित हाथों में है. एक नौजवान अगर ग़ज़ल लिखेगा तो उसमें रूमानी बातें आनी स्वाभाविक ही है। शूर इसके अपवाद नहीं हैं। एक बानगी देखिए-

तुम मिले भी तो बिछड़ने के लिए
कर दिये तन्हा तड़पने के लिये।
टूट कर हर अंग धरा पर जा गिरा
बच गईं आंखें बरसने के लिये।

रूमानी शायरी के साथ ही आज का नौजवान दुनियारी से भी खूब अच्छी तरह वाक़िफ़ है। बल्कि आज का नौजवान ज़्यादा प्रैक्टिकल दिख रहा है। शूर ने यह बात अपने अश्आर से साबित किया है।

बिकता है यहां सब कुछ खरीदार चाहिए
रिश्ते हो या नाते आधार चाहिए।

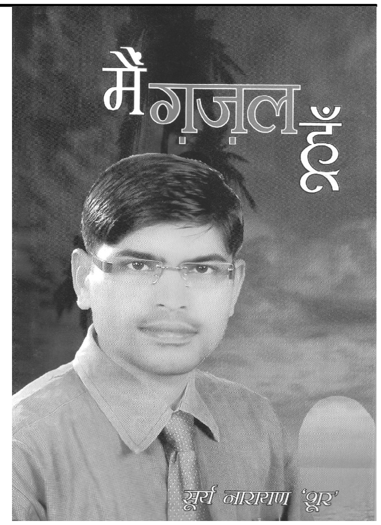

इस पुस्तक की भूमिका डा. कुंअर बेचैन, कृष्ण कुमार यादव, नायाब बलियावी, अवधेश कुमार मिश्र, अरुण सागर के आलेख हैं. 96 पेज वाली इस सजिल्द पुस्तक की कीमत 170 रुपये है, जिसे नई दिल्ली के गगन स्वर पब्लिकेशन ने प्रकाशित किया है.

छेनियों के देश में

नंदल हितैषी हिन्दी साहित्य के जाने-माने हस्ताक्षर हैं। एक अर्से से कविताएं लिख रहे हैं। हाल में इनका मुक्तक संग्रह 'छेनियों का दंश प्रकाशित हुआ है. मुक्तक का प्रचलन हिन्दी में रूबाई से है। रूबाई फारसी की मूल विधा है। हिन्दी साहित्य में मैथिली शरण गुप्त, केशव प्रसाद, हरिवंश राय बच्चन, जगदम्बा प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, निराला, धर्मवीर भारती आदि ने मुक्तक को काफी संमृद्ध किया है. आमतौर पर कवि सम्मेलनों में भी देखा गया है कि कवि अपनी रचना पढ़ने की शुरूआत मुक्तक से करते हैं। इस रूप में भी मुक्तक को अक्सर सुना-पढ़ा जाता रहा है। जहां तक नंदल हितैषी के इस संग्रह की बात है तो इसमें सम्मिलित मुक्तक अपनी रिवायती अंदाज़ को बखूबी प्रदर्शित कर रहे हैं. एक बानगी-

जब तक जीना होगा भइया
तब तक सीना होगा भइया।
कचरे में भी चमक रहा है
कोई नगीना होगा भइया।

प्रकृति के प्रति अपनी नाराजगी को व्यक्त करने में भी नंदल हितैषी संकोच नहीं करते-

अपनी भी क्या राम कहानी
वाह री, कुदरत की मनमानी।
समदर्शी है नाम प्रभू का
प्यास कहीं तो कहीं है पानी।

कुल मिलाकर यह पुस्तक बहुत ही पठनीय है और नये रचनाकारों के लिए मुक्तक के द्वार खोलती हुई नज़र आती है। 112 पेज वाले इस पेपर बैक संस्करण का मूल्य 100 रुपये है, जिसे इंदौर के उमंग प्रकाशन ने प्रकाशित किया है।

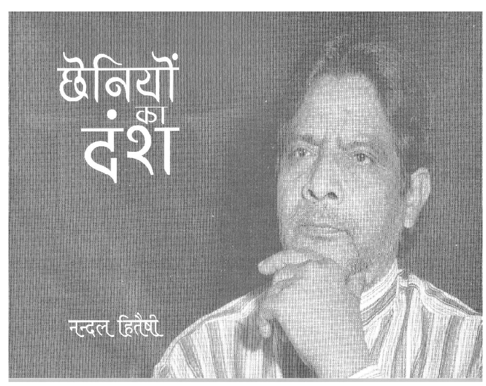

समीक्षकः इम्तियाज़ अहमद गाज़ी